Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक बदर क़ादियान

Weekly BADAR Qadian HINDI

वर्ष- 7
अंक- 20

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

17 शवाल 1443 हिज्री कमरी, 19 हिजरत 1401 हिज्री शम्सी, 19 मई 2022 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

كُتِبَ عَلَيۡكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُوۡنَ

(सूरत बक़रह:184)

अनुवाद : हे वे लोगो जो ईमान लाए हो! तुम पर रोज़े इसी तरह फ़र्ज़ कर दिए गए हैं जिस तरह तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम तक़्वा इख़्तियार करो।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

मस्लहतन (कारणवश) नफ़ली रोज़ा खोल लेना

(1968) वहब बिन अब्दुल्लाह सिवाई से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत सल्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु को आपस में भाई भाई बनाया। हज़रत सल्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से मिलने गए तो उन्होंने हज़रत उम्मे दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हा को देखा कि उन्होंने मैले कुचैले कपड़े पहने हुए हैं। उन्होंने उन से पूछा : तुम्हारा यह क्या हाल है? वह कहने लगीं : तुम्हारे भाई अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु को दुनिया में कोई हाजत नहीं। इतने में हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु आए तो उन्होंने हज़रत सल्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए खाना तैयार किया और उनसे कहा आप रज़ियल्लाहु अन्हु खाएं (और) कहा: मैं तो रोज़ादार हूँ। हज़रत सल्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : मैं उस वक़्त तक कदापि नहीं खाऊंगा जब तक आप रज़ियल्लाहु अन्हु न खाएं। (वहब ने) कहा हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने खाना खाया और जब रात हुई तो हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने लगे। (हज़रत सल्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने) कहा सोएँ। तो वह सो गए। फिर नमाज़ के लिए उठने लगे तो उन्होंने कहा अभी सोएँ। जब रात का आख़िरी हिस्सा हुआ तो हज़रत सल्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : अब उठो और दोनों ने नमाज़ पढ़ी और हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन से कहा : तेरे रब का भी तुझ पर हक़ है और तेरे नफ़स का भी और तेरी पत्नी का भी तुझ पर हक़ है। इस लिए हर हक़ वाले को उसका हक़ दे। हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इस बात का वर्णन किया तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन से फ़रमाया : सल्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने सच्च कहा है।

(सही बुख़ारी,भाग 3 किताब अल् सौम, मुद्रित 2008 क़ादियान)

दुआ के लिए ज़रूरी है कि इन्सान अपने ज़ुअफ़ और कमज़ोरी का पूरा ख़्याल और विचार करे, जूँ-जूँ वह अपनी कमज़ोरी पर ग़ौर करेगा उसी क़दर अपने आपको अल्लाह तआला की सहायता का मुहताज पाएगा और इस तरह पर दुआ के लिए उसके अंदर एक जोश पैदा होगा

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

यह सच्ची बात है خُلِقَ الۡاِنۡسَانُ ضَعِیۡفًا (अल् निसा : 29) इन्सान कमज़ोर मख़लूक़ है। वह अल्लाह तआला के फ़ज़ल और करम के सिवाए कुछ भी नहीं कर सकता। उसका वजूद और इस की परवरिश और जीवनी के सामान सबके सब अल्लाह तआला के फ़ज़ल पर निर्धारित हैं। नासमझ है वह इन्सान जो अपनी अक़्ल और बुद्धिमता या अपने माल और दोलत पर घमंड करता है, क्योंकि यह सब कुछ अल्लाह तआला ही का अतीया है, वह कहाँ से लाया? और दुआ के लिए यह ज़रूरी बात है कि इन्सान अपनी ज़ुअफ़ और कमज़ोरी का पूरा ख़्याल और विचार करे। जूँ-जूँ वह अपनी कमज़ोरी पर ग़ौर करेगा उसी क़दर अपने आप को अल्लाह तआला की सहायता का मुहताज पाएगा और इस तरह पर दुआ के लिए उसके अंदर एक जोश पैदा होगा। जैसे इन्सान जब मुसीबत में ग्रस्त होता है और दुख या तंगी महसूस करता है तो बड़े ज़ोर के साथ पुकारता और चलाता है और दूसरे से सहायता मांगता है। इसी तरह यदि वह अपनी कमज़ोरीयों और लग़ज़िशों पर ग़ौर करेगा और अपने आपको हर-आन अल्लाह तआला की सहायता का मुहताज पाएगा तो उस की रूह पूरे जोश और दर्द से बेक़रार हो कर आस्ताना-ए-उलूहियत पर गिरती और चिल्लाती है और हे रब हे रब कह कर पुकारती है। ग़ौर से क़ुरआन-ए-करीम को देखो तो तुम्हें मालूम होगा कि पहली ही सूरत में अल्लाह तआला ने दुआ की तालीम दी है। اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡهِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡهِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ (अल् फ़ातेहा : 6,7)

दुआ तब ही संक्षिप्त हो सकती है कि वह समस्त लाभों और भलाइयों को अपने अंदर रखती हो

शेष पृष्ठ 12 पर

क़ुरआन-ए-मजीद के सिवाए कौन सी तालीम है जो दुनिया के मतभेद मिटा सकती है यदि दुनिया को मालूम हो जाए कि यह कलाम ख़ुदा तआला की तरफ़ से है तब तो वे अपने ख़्यालात को छोड़ देगी

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो नहल आयत : 65 وَمَاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلَیۡكَ الۡكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَیِّنَ لَهُمُ الَّذِی اخۡتَلَفُوۡا فِیۡهِ ۙ وَهُدًی وَّرَحۡمَةً لِّقَوۡمٍ یُّؤۡمِنُوۡنَ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

कलाम-ए-इलाही के नुज़ूल की एक और भी ज़रूरत है कि दुनिया में लोगों में अख़लाक़ी और मज़हबी उमूर के बारे में शदीद विरोध पाया जाता है। यह विरोध बग़ैर इसके किस तरह दूर हो सकता है कि ख़ुदा तआला की तरफ़ से एक यक़ीनी इलम हासिल हो जाए। अत: इस इलम के देने के लिए यह किताब नाज़िल हुई है। इस के सिवा कौन सी तालीम दुनिया के मतभेद मिटा सकती है। यदि दुनिया को मालूम हो जाए कि यह वाणी ख़ुदा तआला की तरफ़ से है तब तो वे अपने ख़्यालात को छोड़ देगें, उसके बग़ैर वे किस तरह अपने ख़्यालात को छोड़ सकते हैं क्योंकि स्वभाविक प्रत्येक व्यक्ति अपने ख़्यालात को दूसरों के ख़्यालात हर पर प्राथमिकता देता है।

इस आयत में इस तरफ़ भी संकेत है कि तुमको पहले नबियों के बाद दूसरे नबी के आने पर एतराज़ है। दूसरा नबी तो ख़ुद तुम्हारे आमाल की वजह से आया है, तुमने सच्चाई को छोड़ कर विरोध क्यों किया। तुम विरोध न करते तो बे-शक नबी की ज़रूरत नहीं होती परन्तु तुमने रोग तो पैदा कर लिया अब कहते हो कि ख़ुदा तआला की तरफ़ से किसी मतभेद को दूर करने वाले शख़्स की आमद की ज़रूरत नहीं।

ऊपर वर्णित ज़मून पर यह सवाल किया जा सकता है कि फ़र्ज़ करो लोग हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम की शरीयत पर ही अमल करते रहते और विरोध न करते तो क्या रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा कामिल शरीयत या कामिल तालीम नहीं आती? इसका उत्तर यह है कि यह फ़र्ज़ी कलाम है। वास्तव में न विरोध करने से लोगों ने रुकना था और न ही इस तालीम के आने में रोक पैदा होनी थी। परन्तु यदि मान लो ऐसी सूरत होती भी तो अल्लाह तआला ने इसका यह जवाब दिया है कि لَوۡ كَانَ فِی الۡاَرۡضِ مَلٰٓئِكَةٌ یَّمۡشُوۡنَ مُطۡمَئِنِّیۡنَ لَنَزَّلۡنَا عَلَیۡهِمۡ مِّنَ السَّمَآءِ

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

एक ख़ादिम को कम से कम रोज़ाना पाँच नमाज़ें समय पर बाजमाअत पढ़ लेनी चाहिऐं, टक्करें नहीं मारनी, एक ख़ादिम जब संजीदगी से नमाज़ पढ़ लेगा तो समझ लें कि उसने सब कुछ कर लिया

हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम की हिज्रत करने की बात तो ठीक है लेकिन उनके फ्रांस की तरफ़ हिज्रत करने वाली बात दरुस्त नहीं क्योंकि इस ज़माने में फ्रांस में उनके अनुयाईयों की कोई जमाअत नहीं थी बल्कि उनके क़बायल तो कश्मीर के इलाक़ा में थे इसलिए उसी तरफ़ उन्होंने हिज्रत की थी

क़ुरआन-ए-करीम का आदेश اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ बहुत स्पष्ट है, जिसका मतलब है कि ऐसी तलाक़ जिस में रुजू हो सके, केवल दो बार हो सकती है,

तीसरी तलाक़ के बाद उस पति का उस बीवी से सुलह करने का हक़ बाक़ी नहीं रहता, न इद्दत के समय में बग़ैर निकाह के और न ही इद्दत के ख़त्म होने पर निकाह के साथ

सय्यदना हज़रत अमीर मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम

सय्यदना हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त12)

प्रश्न : एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में लिखा कि यदि मियां बीवी में उनकी शादी के अर्से में तीन दफ़ा तलाक़ हो जाए तो तीसरी तलाक़ के बाद सुलह की क्या सूरत होगी? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 22 जुलाई 2019 ई. में निमन्लिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवरने फ़रमाया :

क़ुरआन-ए-करीम का आदेश اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ बहत स्पष्ट है, जिसका मतलब है कि ऐसी तलाक़ जिसमें रुजू हो सके, केवल दो बार हो सकती है। इसके बाद फ़रमाया فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ. अर्थात ऐसी दो तलाक़ों के बाद यदि पति अपनी बीवी को तीसरी तलाक़ दे दे तो इस तीसरी तलाक़ के बाद उस पति का उस बीवी से सुलह करने का हक़ बाक़ी नहीं रहता। न इद्दत के समय में बग़ैर निकाह के और न ही इद्दत के ख़त्म होने पर निकाह के साथ वह उसके साथ घर आबाद कर सकता है। जब तक कि वह महिला किसी दूसरे व्यक्ति से बाक़ायदा निकाह न करे और वह पति उस महिला को बग़ैर किसी मंसूबा बंदी के तलाक़ दे दे।

अत: आपकी वर्णन करदा सूरत में अब इन मियां बीवी के मध्य सुलह की कोई गुंजाइश नहीं, जब तक कि उनके मध्य حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ वाली शर्त पूरी न हो।

प्रश्न : एक महिला ने लिखा कि यदि कोई ग़ैर अहमदी मुस्लमान मुझ से किसी ग़ैर अज़ जमाअत ज्ञानी की लिखी हुई तफ़सीर के बारे में पूछे तो मुझे उसे कौन सी तफ़सीर पढ़ने के लिए बतानी चाहिए? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज ने अपने पत्र तिथि 22 जुलाई 2019 ई. में इस प्रश्न का निमन्लिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : पुराने बुज़ुर्गों की समस्त तफ़सीरें अच्छी हैं। आपकी ज्ञान के लिए कुछ तफ़सीरों के नाम लिख रहा हूँ। उदाहरणत: तीसरी सदी हिज्री में लिखी जाने वाली तफ़सीर तिब्री, जिसका पूरा नाम "जामेउल ब्यान फ़ी तावीलुल क़ुरआन'' है और जिसे अबू जाफ़र मुहम्मद बिन जरीर बिन यज़ीद बिन कसीर तिबरी ने तसनीफ़ किया। छट्टी सदी हिज्री में इमाम अब्दुल्लाह मुहम्मद फ़ख़रुद्दीन इब्ने ख़तीब राज़ी की तसनीफ़ करदा तफ़सीर "मुफ़ातीह अल् गैब'' , मारूफ़ "तफ़सीर-ए-कबीर" बहुत उम्दा तफ़सीर है। सातवीं सदी हिज्री में लिखी जाने वाली तफ़सीर "जामे अहकाम अल-क़ुरआन" मारूफ़ "तफ़सीर क़ुर्तबी" मशहूर ज्ञानी अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद बिन अबू बकर मारूफ़ ईमाम क़ुर्तबी ने तसनीफ़ फ़रमाई।

इसके अतिरिक्त तफ़सीर जलालीन, तफ़सीर इब्ने कसीर और तफ़सीर रूहुल मानी इत्यादि अच्छी और पढ़ने के योग्य तफ़ासीर हैं।

प्रश्न : एक दोस्त ने कुछ अहबाब की तरफ़ से पूछे जाने वाले इस प्रश्न के विषय में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से मार्ग दर्शन चाहा है कि घाना के माहौल को सामने रखते हुए जहां ऐसे ग़ैर अहमदी इमाम भी हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और अहमदियत को सच्चा और बेहतरीन इस्लाम समझते हैं और मुख़ालिफ़त भी नहीं करते लेकिन किसी मजबूरी की वजह से क़बूल-ए-अहमदियत की तौफ़ीक़ नहीं पाते, तो क्या ऐसे अफ़राद या इमामों के पीछे नमाज़ पढ़ना जायज़ होगा? हुज़ूर अनवर ने अपने पत्र तिथि 22 जुलाई 2019 ई. में इस का निमन्लिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ग़ैर अहमदी इमाम के पीछे में नमाज़ न पढ़ने के विषय पर सैर-ए-हासिल बेहस फ़रमाई है और जहां आपने इस मसला के अलग पहलूओं को हमारे लिए खोल खोल कर वर्णन फ़रमाया है वहां आपके वर्णन करदा मसला पर भी रोशनी डाली है। इसलिए एक अवसर पर ऐसे लोगों के विषय में वर्णन हुआ जो न मुकफ़्फ़िर हैं न मुकज़्ज़िब और उनके पीछे नमाज़ पढ़ने का मसला दरयाफ़त किया गया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया :

"यदि वे मुनाफ़िक़ाना रंग में ऐसा नहीं करते जैसा कि कुछ लोगों की आदत होती है कि (बा-मुसलमाँ अल्लाह अल्लाह बा-ब्रह्मण राम राम) तो वह विज्ञापन दे दें कि हम न झूठे हैं न इनकार करने वाले (बल्कि बुज़ुर्ग नेक वली उल्लाह समझते हैं) और मुकफ़्फ़ेरीन को इस लिए कि वह एक मोमिन को काफ़िर कहते हैं, काफ़िर जानते हैं तो हमें ज्ञात हो कि वे सच्च कहते हैं अन्यथा हम उनका कैसे विश्वास कर सकते हैं और क्योंकर उनके पीछे नमाज़ का आदेश दे सकते हैं। उद्देश्य گر حفظِ مراتب نہ کُنی زندیقی।

नरमी के अवसर पर नरमी और सख़्ती के अवसर पर सख़्ती करनी चाहिए फ़िरऔन में एक किस्म का रुश्द था और इसी रुश्द का परिणाम था कि इस के मुख से वह कलिमा निकला, जो सद-हा डूबने वाले कुफ़्फ़ार के मुँह से नहीं निकला।

اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیْۤ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْۤا اِسْرَآءِیْلَ.

उस के साथ नरमी का आदेश हुआ

قُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّیِّنًا.

और दूसरी तरफ़ नबी करीम को फ़रमाया وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ. ज्ञात होता है उन लोगों में बिल्कुल रुश्द नहीं था। अत: ऐसे आरोप लगाने वालों के साथ साफ़ साफ़ बात करनी चाहिए ताकि उनके दिल में जो गंद-ओ-ख़ुबस गुप्त है निकल आए और नंग जमाअत न हों।'' (बदर नम्बर 16 भाग 7 तिथि 23 अप्रैल 1908 ई. पृष्ठ 4)

प्रश्न एक महिला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तसनीफ़ "तौज़ीउल मराम" के हवाले से फ़रिश्तों के चांद, सूरज और सितारों पर-असर डालने, इन तत्वों के इन्सानों पर-असर डालने, और फ़रिश्तों के जस्मानी तौर पर ज़मीन पर उतरने के बारे में हुज़ूर अनवर से मार्गदर्शन चाहा है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 22 जुलाई 2019 ई. में इस का निमन्लिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी इस तसनीफ़-ए-लतीफ़ में फ़रिश्तों के सितारों पर प्रभावित होने, सूरज, चांद, सितारों के हमारी ज़मीन के पेड़ पौधों और जीवों पर असर डालने और फ़रिश्तों के इन्सानों पर रुहानी असरात होने के विषय को निहायत लतीफ़ ढंग में वर्णन फ़रमाया है।

इसलिए फ़रिश्तों के सूरज, चांद, सितारों पर प्रभावित होने के आप के वर्णन करदा मज़मून का ख़ुलासा यह है कि फ़रिश्ते इन सितारों पर ख़ुदा तआला के आदेश के तहत कार्य कर रहे और सुनियोजित हैं और उन नक्षत्रों पर उनकी

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

"जब मेरे पिता ख़लीफ़ा बनाए गए और अल्लाह ने उन्हें इमारत सुपुर्द फ़रमाई तो ख़िलाफ़त के आरंभ ही में आपने हर तरफ़ से फ़ित्नों को उद्गमन और झूठी नबुव्वत का दावा करने वालों की सरगर्मीयों और मुनाफ़िक़ मुर्तदों की बग़ावत को देखा और आप पर इतने कष्ट टूटे कि यदि वे पहाड़ों पर टूटते तो वे ज़मीन में धवस्त हो जाते और फ़ौरन गिर कर टुकड़े टुकड़े हो जाते लेकिन आपको रसूलों जैसा सब्र अता किया गया।'' हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद सिद्दीक़-ए-अकबर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

अबू बकर भूगोल का गहरा ज्ञान रखते थे और ज़मीन के निशानात और इन्सानी आबादियों और अरबी द्वीप के रास्तों से बख़ूबी परीचित थे। गोया कि अरब द्वीप संक्षिप्त शक्ल में आपकी आँखों के सामने था जैसा कि वर्तमान में जदीद टैक्नोलोजी से लैस मराकज़-ए-क़ियादत में होता है

इर्तिदाद का उपद्रव और बग़ावत के दौरान भिजवाई जाने वाली मुहिम्मात का वर्णन

जिन लश्करों को अबू बकर ने रवाना फ़रमाया वे आपस में जुड़े हुए थे और यह ख़िलाफ़त की अहम कामयाबियों में से था क्योंकि इन लश्करों के अंदर क़ियादत की महारत के साथ हुस्न-ए-तंज़ीम भी थी

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 15 अप्रैल 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुतबा से पहले जो ख़ुतबा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के वाक़ियात के बारे में दिया जा रहा था इस में विभिन्न हवाले वर्णन किए गए थे जिनसे साबित होता है कि मुर्तद होने वालों को हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने सज़ा उनके इर्तिदाद की वजह से नहीं दी थी बल्कि बग़ावत और जंग की वजह से उनको उत्तर दिया गया था। इस बारे में ज़माने के हकम-ओ-अदल हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी हज़रत अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़िलाफ़त के समय में इस इर्तिदाद को सरकशी और बग़ावत से ताबीर किया है।

इसलिए इस का वर्णन करते हुए कि हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु की बहादुरी और दिलेरी कितनी थी आप फ़रमाते हैं कि "शोधकर्ताओं से यह बात छुपी नहीं कि आपकी ख़िलाफ़त का वक़्त ख़ौफ़ और मसायब का समय था। इसलिए जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वफ़ात पाई तो इस्लाम और मुस्लमानों पर मसायब टूट पड़े। बहुत से मुनाफ़िक़ मुर्तद हो गए और मुर्तदों की ज़ुबाने लम्बी हो गईं और उपद्रवियों के एक गिरोह ने दावा-ए-नबुव्वत कर दिया और अक्सर बादिया नशीन उनके गर्द जमा हो गए यहां तक कि मुसैलमा कज़्ज़ाब के साथ एक लाख के क़रीब जाहिल और बदकिर्दार आदमी मिल गए और फ़ित्ने भड़क उठे और मसायब बढ़ गए। और आफ़ात ने दूर और नज़दीक का घेराव कर लिया। और मोमिनों पर एक शदीद ज़लज़ला तारी हो गया। इस वक़्त समस्त लोग आज़माऐ गए और ख़ौफ़नाक और हवासबाख़ता करने वाले हालात प्रकट हो गए और मोमिन ऐसे लाचार थे कि मानो उनके दिलों में आग के अँगारे दहकाए गए हों या वे छुरी से ज़िबह कर दीए गए हों। कभी तो वे खैरुल बरिया (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की जुदाई की वजह से और गाहे उन उपद्रवों के कारण जो जला कर भस्म कर देने वाली आग की सूरत में ज़ाहिर हुए थे रोते। अमन का शायबा तक नहीं था। उपद्रव करने वाले गंद के ढेर पर उगे हुए सब्ज़े की तरह छा गए थे। मोमिनों का ख़ौफ़ और उनकी घबराहट बहुत बढ़ गई थी। और दिल दहश्त और बेचैनी से लबरेज़ थे। ऐसे (नाज़ुक) वक़्त में (हज़रत) अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु हाकिम-ए-वक़्त और (हज़रत) ख़ातमुल अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा बनाए गए। मुनाफ़िक़ों, काफ़िरों और मुर्तदों के जिन रव्व्यों और तौर तरीक़ों का आपने मुशाहिदा किया उनसे आप हम-ओ-ग़म में डूब गए। आप इस तरह रोते जैसे सावन की झड़ी लगी हो और आपके आँसू चश्म-ए-रवां की तरह बहने लगते और आप (रज़ियल्लाहु अन्हो) (अपने) अल्लाह से इस्लाम और मुस्लमानों की ख़ैर की दुआ मांगते। (हज़रत) आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मर्वी है। आप फ़रमाती हैं कि :

जब मेरे पिता ख़लीफ़ा बनाए गए और अल्लाह ने उन्हें इमारत प्रदान फ़रमाई तो ख़िलाफ़त के आरंभ ही में आपने हर तरफ़ से फ़ित्नों को उद्गमन और झूठी नबुव्वत का दावा करने वालों की सरगर्मियों और मुनाफ़िक़ मुर्तदों की बग़ावत को देखा और आप पर इतने कष्ट टूटे कि यदि वे पहाड़ों पर टूटते तो वे ज़मीन में धवस्त हो जाते और फ़ौरन गिर कर टुकड़े टुकड़े हो जाते लेकिन आपको रसूलों जैसा सब्र अता किया गया।''

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "यहां तक कि अल्लाह की नुसरत आ पहुंची और झूठे नबी क़तल और मुर्तद हलाक कर दीए गए। फ़ित्ने दूर कर दीए गए और मसायब छट गए और मुआमले का फ़ैसला हो गया और ख़िलाफ़त का मुआमला मुस्तहकम हुआ और अल्लाह ने मोमिनों को आफ़त से बचा लिया और उनकी ख़ौफ़ की हालत को अमन में बदल दिया और उनके लिए उनके दीन को मज़बूती बख़शी और एक जहान को हक़ पर क़ायम कर दिया और मुफसिदों के चेहरे काले कर दीए। और अपना वादा पूरा किया और अपने बंदे (अबू बक़र) सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की सहायता फ़रमाई और सरकश सरदारों और बुतों को तबाह और बर्बाद कर दिया। और कुफ़्फ़ार के दिलों में ऐसा रोब डाल दिया कि वे निरस्त हो गए और (आख़िर) उन्होंने रुजू कर के तौबा की और यही ख़ुदाए क़हहार का वादा था और वे सब सादिक़ों से बढ़कर सादिक़ है। अत: ग़ौर कर कि किस तरह ख़िलाफ़त का वादा अपने पूरे लवाज़मात और अलामात के साथ (हज़रत अबू बक़र) सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की ज़ात में पूरा हुआ मैं अल्लाह से दुआ करता हूँ कि वे इस तहक़ीक़ की ख़ातिर तुम्हारा सीना खोल दे।' हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "ग़ौर करो कि आपके ख़लीफ़ा होने के वक़्त मुस्लमानों की क्या हालत थी। इस्लाम मसायब की वजह से आग से जले हुए शख़्स की तरह (नाज़ुक हालात में) था। फिर अल्लाह ने इस्लाम को इस की ताक़त लौटा दी और उसे गहरे कुँवें से निकाला और झूठी नबुव्वत का दावा करने वाले दर्दनाक अज़ाब से मारे गए और मुर्तद जानवरों की तरह हलाक किए गए और अल्लाह ने मोमिनों को इस ख़ौफ़ से जिस में वे मर्दों की तरह थे अमन अता फ़रमाया। इस तकलीफ़ के रफ़ा होने के बाद मोमिन ख़ुश होते थे और (हज़रत अबू बक़र) सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को मुबारक बाद देते और मर्हबा कहते हुए उनसे मिलते थे। आपकी तारीफ़ करते और रब्बुल अरबाब की बारगाह से आपके लिए दुआएं करते थे। आपकी ताज़ीम और तकरीम के आदाब बजा लाने के लिए लपकते थे। और उन्होंने आपकी मुहब्बत को अपने दिल की गहराई में दाख़िल कर लिया और वे अपने समस्त मुआमलात में आपकी पैरवी करते थे और

वे आपके शुक्रगुज़ार थे। उन्होंने अपने दिलों को रोशन और चेहरों को शादाब किया और वे मुहब्बतऔर प्रेम में बढ़ गए और पूरे प्रयास से आपकी इताअत की। वे आपको एक मुबारक वजूद और नबियों की तरह ताईद याफताह समझते थे। और ये सब कुछ (अबू बक़र) सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के सिदक़ और गहरे यक़ीन की वजह से था।"

(सिर्रुल खिलाफ़ा उर्दू अनुवाद अरबी इबारत, मुद्रित नज़ारत इशाअत, पृष्ठ 47 से 51)

यह सिर्रुल खिलाफ़ा आपकी अरबी में किताब है। ये इस अरबी का उर्दू अनुवाद है।

फ़ित्ना इर्तिदाद और बग़ावत जब हुआ है तो इस की तरफ़ आपने कुछ मुहिम्मात भेजी थीं जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद तक़रीबन सारे अरब ने ही इर्तिदाद इख़्तियार कर लिया था। कुछ लोग तो वे थे जिन्हों ने केवल ज़कात देने से इन्कार किया था। उनके ख़िलाफ़ जो कार्यवाहियां हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ से की गईं उनका वर्णन पहले वर्णन हो चुका है।

अब दूसरे गिरोह का वर्णन किया जाता है जिन्हों ने न केवल इस्लाम से इर्तिदाद इख़्तियार कर लिया था बल्कि बग़ावत कर दी थी और मुस्लमानों को क़तल भी कर रहे थे। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी ख़बर लेने का पक्का निर्णय फ़रमाया इसलिए بِدَايَة و النِّهَايَة में लिखा है कि हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर के आराम करने के बाद हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लामी अफ़्वाज के साथ तलवार सोंते हुए मदीना से सवार हो कर ज़ुल कस्सा की तरफ़ रवाना हुए जो मदीना से इस ज़माने में जो सफ़र का माध्यम था उस के मुताबिक़ एक रात और एक दिन के फ़ासले पर वाक़्य है। सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हु जिनमें हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे वे आपसे इसरार कर रहे थे कि आप मदीना वापस तशरीफ़ ले जाएं और अरबों से जंग के लिए अपने सिवा किसी दूसरे बहादुर को भेज दें। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन फ़रमाती हैं कि मेरे पिता तलवार उठाए हुए सवारी पर सवार हो कर रवाना हुए तो हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने आकर आपकी ऊंटनी की महार पकड़ ली और निवेदन किया : हे ख़लीफ़-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैं आपसे वे बात कहता हूँ जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अहद के दिन फ़रमाई थी। आपने तलवार क्यों सौंती है? हमें अपनी जान की वजह से मुसीबत में न डालिए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि हमें अपनी जान की वजह से मुसीबत में न डालिए। अल्लाह की क़सम! यदि हमें आपकी जान की मुसीबत पहुंची तो आपके बाद हमेशा के लिए इस्लाम का निज़ाम नहीं रहेगा। इस पर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु वापस तशरीफ़ ले गए और फ़ौज को भेज दिया।

(अल् बिदाया वन्न्हाया भाग 3 हिस्सा 6 पृष्ठ 311-312 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया)

जब हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके लश्कर ने आराम कर लिया और उनकी सवारियां भी ताज़ा दम हो गईं और अम्वाल-ए-ज़कात भी बकसरत आ गए जो मुस्लमानों की ज़रूरत से ज़ायद थे तो हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़ौज को तक़सीम किया और ग्यारह झंडे बाँधे।

एक झंडा हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए बाँधा और उनको हुक्म दिया कि वे तुलेहा बिन ख़ूवेलिद के मुक़ाबले पर जाएं इस से फ़ारिग़ हो कर बुतहा में मालिक बिन नुवैरह से मुक़ाबला के लिए जाएं यदि उस वक़्त तक वे उनके मुक़ाबला पर जमा रहे। ये सब मुर्तद होने वालों थे, जंग करना चाहते थे। बुताह बनू असद के इलाक़े में एक चश्मे का नाम है। इस तरफ़ आपने भेजा। हज़रत अक्रमा बिन अबू जहल रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए झंडा बाँधा और उनको मुसैलमा के मुक़ाबले का हुक्म दिया। तीसरा झंडा हज़रत मुहाजिर बिन उमय्या रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए बाँधा और उनको हुक्म दिया कि वे उन की फ़ौजों का मुक़ाबला करें। फिर कैस बन मकशूह और यमन वालों के मुक़ाबला में जो अब से बरसर-ए-पैकार थे अब्ना की सहायता करें। अब फ़ारस वालों में से एक क़ौम की औलाद थी जिन्हों ने यमन में सुकूनत इख़्तियार कर ली थी और अरबों में शादियां की थीं। और फ़रमाया कि इस से फ़ारिग़ हो कर कुंदा के मुक़ाबले के लिए हज़र-मौत चले जाएं। हज़र-मौत भी यमन का एक इलाक़ा है। चौथे हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए झंडा बाँधा और उनको हमकतीन की तरफ़ भेजा जो शाम की सरहद पर है। पांचवें हज़रत उमर बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए झंडा बाँधा और उन को क़ुज़ाआ विदीया और हारिसा की जमईयतों के मुक़ाबले पर जाने का हुक्म दिया। छटा झंडा हज़रत हुज़ैफ़ा बिन मेहसल गल्फानी रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए बाँधा और उनको दबा वालों की तरफ़ जाने का हुक्म दिया। दबा भी अमान में अरबों का एक बाज़ार था। अमान का एक क़दीम और मशहूर शहर था। मार्कीट लगा करती थी। सातवाँ अर्फजा बिन्त हरसमा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए झंडा बाँधा और उनको मेहरा जाने का हुक्म दिया। मेहरा यमन के एक इलाक़े का नाम है। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन दोनों को फ़रमाया कि एक जगह इकट्ठे हो जाएं परन्तु जो इलाक़े उनके सपुर्द किए गए हैं उनमें वे एक दूसरे पर अमीर रहेंगे। अर्थात पहले यमन वाले और दूसरे उनको। फिर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने शुरहबील बिन हसना को हज़रत अकरमा बिन अबुजहल के पीछे रवाना किया और हुक्म दिया कि यमामा से फ़ारिग़ हो कुज़ाआ के मुक़ाबला पर चले जाना और मुर्तद होने वालों से जंग के अवसर पर तुम ही अपने लश्कर के अमीर होगे। नौवां हज़रत तुरैफ़ा बिन हाजिज़ रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए झंडा बाँधा और उनको हुक्म दिया कि वे बनू सुलेम और हावाज़िन का मुक़ाबला करें। दसवाँ झंडा हज़रत सुवैद बिन मुक़र्रिन रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए बाँधा और उनको हुक्म दिया कि वह यमन के इलाक़े तिहामा की तरफ़ जाएं और ग्यारहवां झंडा हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रमी के लिए बाँधा और उनको बेहरीन जाने का हुक्म दिया। इसलिए यह उमरा ज़ुल कुस्सा से अपनी अपनी सिम्त रवाना हो गए।

(तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 257 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.) (उद्धरित सय्यदना अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़सीत और कारनामे, पृष्ठ 288 मक्तबा अल् फ़ुर्कान मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान) (मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 1 पृष्ठ 527 भाग 2 पृष्ठ 270, 311, 496) (मोअज्जमुल वसीत ज़ेर-ए-माद्दा "बनी")

हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हर दस्ते के अमीर को हुक्म दिया कि जहां-जहां से वह गुज़रीं वहां के ताक़तवर मुस्लमानों को अपने साथ लें और कुछ ताक़तवर लोगों को वहीं अपने इलाक़े की हिफ़ाज़त के लिए पीछे छोड़ दें।

(तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 257 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु की इस तक़सीम का वर्णन करते हुए एक लेखक लिखते हैं कि ज़ुल कस्सा फ़ौजी मर्कज़ क़रार पाया। यहां से मुनज़्ज़म इस्लामी अफ़्वाज इर्तिदाद की तहरीक को कुचलने के लिए विभिन्न इलाक़ों की तरफ़ रवाना हुए। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु के योजना से अलग उत्तम शोध और गहरे भूगोलिक अनुभव का पता चलता है। दस्तों की तक़सीम और उनके अवसरों पर हद बाँधने से वाज़िह होता है कि अबू बक़र भूगोल का गहरा ज्ञान रखते थे और ज़मीन के निशानात और इन्सानी आबादियों और अरबी द्वीप के रास्तों से बख़ूबी परीचित थे।

मानों कि अरब द्वीप मुजस्सम शक्ल में आपकी आँखों के सामने था जैसा कि वर्तमान में जदीद टैक्नोलोजी से लैस मराकज़ क़ियादत में होता है। जो व्यक्ति भी लश्करों को रवाना करने इनकी दिशा का निर्धारण करने, दूरी के बाद इजतिमा और दुबारा एकत्र होने के लिए तफ़र्रुक़ में ग़ौर-ओ-फ़िक्र करेगा उसको यह अच्छी तरह मालूम हो जाएगा कि यह मंसूबा बंदी पूरे अरब द्वीप पर मिसाली और सही अंदाज़ से मुहीत थी और उन लश्करों के साथ सम्पर्क भी इंतिहाई दक़ीक़ था। अबू बक़र को हर समय इस का पता रहता था कि फ़ौज कहाँ है। इस के आंदोलनों और समस्त विषयों से बख़ूबी परीचित रहते थे और यह भी पता रहता था कि उनको क्या सफ़लता हुई और कल को क्या प्रोग्राम है? पत्राचार इंतिहाई दक़ीक़ और तेज़ हुआ करते थे और मैदान-ए-क़िताल से ख़बरें बराबर मदीना मरकज़-ए-क़ियादत में हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु को पहुँचती रहती थीं। पूरी फ़ौज से बराबर संपर्क क़ायम रहता था। मरकज़-ए-क़ियादत और मैदान-ए-क़िताल के मध्य फ़ौजी ख़बर देनें में अबू ख़ेमसा अंसारी, सलमा बिन सलामा, अबू बरज़ा असलमी और सलमा बिन वक्श ने नुमायां हैसियत हासिल की।

जिन लश्करों को अबू बक़र ने रवाना फ़रमाया वह आपस में जुड़े थे और यह ख़िलाफ़त की अहम कामयाबियों में से था क्योंकि इन लश्करों के अंदर क़ियादत की महारत के साथ हुस्न-ए-तंज़ीम भी मौजूद थी।

अतिरिक्त इसके क़िताल में अनुभव पहले से था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दौर में ग़ज़वात और सीरिया की तहरीक में उन्हें अस्करी आमाल का अच्छा तजुर्बा हो चुका था। अबू बक़र की हुकूमत का अस्करी निज़ाम अरब द्वीप में समस्त अस्करी कुव्वतों पर फ़ौक़ियत रखता था और उन लश्करों के क़ायद सेफ़ुल्ला अल् मस्लूल ख़ालिद बिन वलीद थे जो इस्लामी फ़ुतूहात और हुरूब इर्तिदाद में अलग अबक़री शख़्सियत के हामिल थे। इस्लामी फ़ौज की यह तक़सीम इंतिहाई अहम फ़ौजी मन्सूबा के अधीन अमल में आई थी क्योंकि मुर्तद होने वालों अभी तक अपने अपने इलाक़ों में मुतफ़र्रिक़ थे अर्थात कि बिखरे हुए थे जमा नहीं हुए थे। मुस्लमानों के ख़िलाफ़ उनकी जत्था बंदी अमल में नहीं आ सकी थी। बड़े क़बायल दूर दराज़ इलाक़ों में बिखरे थे। वक़्त उस के लिए काफ़ी नहीं था कि वे आपस में जत्था बंदी कर सकें क्योंकि इर्तिदाद शुरू हुए अभी तीन माह से ज़्यादा का अरसा नहीं गुज़रा था और दूसरे वे अपने ख़िलाफ़ मुस्लमानों के ख़तरे को नहीं समझ सके। वह ये तसव्वुर किए हुए थे कि चंद माह में समस्त मुस्लमानों का सफ़ाया कर देंगे। इसी लिए अबू बक़र ने चाहा कि अचानक उनकी शौकत और हुकूमत का सफ़ाया किया जाए, पूर्व इसके कि वह अपने बातिल की नुसरत के लिए जत्था बंदी कर सकें। इसलिए अबू बक़र ने उनके फ़ित्ना के बढ़ने से क़बल ही उनकी ख़बर ली और उन्हें इस बात का अवसर नहीं दिया कि वह अपना सिर उठा सकें और अपनी ज़बान दराज़ कर सकें जिससे मुस्लमानों को तकलीफ़ पहुंचा सकें। (उद्धरित सय्यदना अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़सीत और कारनामे अज़ डाक्टर अली मोहम्मद सलाबी पृष्ठ 288 से 290 मकतबा अल् फुर्कान मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान)

हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु की जानिब से क़ायदीन की तक़र्रुरी के हवाले से विभिन्न उमूर का वर्णन करते हुए एक लिखने वाले मुसन्निफ़ लिखते हैं कि नंबर एक तो इस मन्सूबा में इस बात का एहतिमाम किया गया कि लश्करों के मध्य आपस में रब्त और सहयोग बराबर क़ायम रहे। जबकि उनके मुक़ामात और जिहात विभिन्न थे लेकिन सब एक ही सिलसिला की कड़ियाँ थीं। उनका आपस में मिलना और जुदा होना एक ही उद्देश्य के पेश-ए-नज़र था और ख़लीफ़ा के मदीना में होते हुए क़िताल के समस्त उमूर का कंट्रोल, पावर उसके हाथ में था अर्थात ख़लीफ़ा के हाथ में) दूसरा नंबर यह कि सिद्दीक़ अकबर ने दारुल खिलाफ़ा मदीना की हिफ़ाज़त के लिए फ़ौज का एक हिस्सा अपने पास रखा और इसी तरह हुकूमत के कार्यों में राय और मश्वरा के लिए बड़े सहाबा की एक जमाअत अपने पास रखी। तीसरे यह कि अबू बक़र को मालूम था कि इर्तिदाद से प्रभावित इलाक़ों में इस्लामी क़ुव्वत मौजूद है। आपको उस की फ़िक्र लाहक़ हुई कि कहीं ये मुस्लमान मुशरेकीन के ग़ैज़ और ग़ज़ब का निशाना न बनें इसलिए क़ायदीन को हुक्म फ़रमाया कि उनमें से जो क़ुव्वत और ताक़त के मालिक हैं उनको अपने साथ शामिल कर लें और उन इलाक़ों की हिफ़ाज़त की ख़ातिर कुछ अफ़राद को वहां निर्धारित कर दें। चौथे मुर्तद होने वालों के साथ जंग करते हुए अबू बक़र ने اَلْحَرْبُ خُدْعَةٌ के उसूल को अपनाया। फ़ौज के उद्देश्य कुछ ज़ाहिर करते हालाँकि उद्देश्य कुछ और ही होता। इंतिहाई सावधानी और सतर्क रहने का तरीक़ा इख़तियार किया कि कहीं उनका मन्सूबा प्रकट न होने पाए। इस तरह अबू बक़र की क़ियादत में सयासी महारत, इलमी तजुर्बा, इलम रासिख़ और रब्बानी फ़तह और नुसरत नुमायां होती हैं। (उद्धरित सय्यदना अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़सीत और कारनामे अज़ डाक्टर अली मुहम्द सलाबी अनुवादक, पृष्ठ 297-298 मकतबा अल् फुर्कान मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान)

इस अवसर पर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने दो फ़रमान भी लिखे थे एक अरब क़बायल के नाम और दूसरा फ़ौज के सेनापतित्यों की हिदायत के लिए। (हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु के सरकारी ख़ुतूत मुअल्लिफ़ ख़ुरशीद फ़ारूक़ी, पृष्ठ 22)

यही पहले मुसन्निफ़ डाक्टर अली मुहम्मद सलाबी जो हैं, यह एक ख़त के विषय में लिखते हैं कि इस्लामी लश्करों की तैयारी और ठोस तंज़ीम के बाद हम देखते हैं कि तहरीरी दावत का सिलसिला जारी रहा और उसने अहम किरदार अदा किया।

आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक आम ख़त तहरीर किया जो सीमित मज़मून पर मुश्तमिल था। मुर्तद होने वालों से क़िताल के लिए अफ़्वाज को रवाना करने से पूर्व आपने इस ख़त को मुर्तद होने वालों और साबित-क़दम रहने वाले सब के मध्य ऊंचे पैमाने पर सम्भावित हद तक नशर करने की कोशिश की। क़बायल के पास लोगों को रवाना किया और उन्हें हुक्म दिया कि वहां पहुंच कर हर भीड़ में यह ख़त सुनाएँ और जिसको भी इस ख़त का मज़मून पहुंचे उसे हुक्म फ़रमाया कि वे उन लोगों तक बात पहुंचा दे जिन तक नहीं पहुंची। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस ख़त में आम और ख़ास सबको ख़िताब किया ख़ाह वे इस्लाम पर साबित-क़दम रहने वाले हों या इस से मुर्तद हो जाने वाले।(उद्धरित सय्यदना अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़सीत और कारनामे अज़ डाक्टर अली मोहम्मद सलाबी पृष्ठ 290-291 मकतबा अल् फुर्कान मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान)

हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु का वह ख़त जो क़बायल अरब के नाम था वह सबसे ज़्यादा तफ़सीलात के साथ तिब्री ने वर्णन किया है। हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी तसनीफ़ सिर्रुल खिलाफ़ा में इस ख़त का भी वर्णन फ़रमाया है। आप ने फ़रमाया कि मुनासिब है कि हम यहां वह ख़त दर्ज कर दें जो सिद्दीक़ अकबर ने मुर्तद होने वाले क़बायल अरब की तरफ़ लिखा ताकि इस ख़त पर सूचना पाने वाले सिद्दीक़ अकबर की अल्लाह के निशानों का प्रचार और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समस्त सुंन के दिफ़ा में मज़बूती को देखकर ईमान और बसीरत में तरक़्क़ी करें। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वह ख़त लिखते हैं जो इस तरह शुरू होता है।

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम यह ख़त अबू बक़र ख़लीफ़ रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से हर ख़ास-ओ-आम के लिए है। जिस तक पहुंचे चाहे वे इस्लाम पर क़ायम रहा है या इस से फिर गया है। हिदायत का अनुसरण करने वाले हर शख़्स पर सलामती हो जो हिदायत के बाद गुमराही और अंधेपन की तरफ़ नहीं लौटा। अत: मैं तुम्हारे सामने उस अल्लाह की प्रशंसा वर्णन करता हूँ जिसके सिवा कोई उपास्य नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं जो वाहिद है लाशरीक है और यह कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके बंदे और रसूल हैं और जो तालीम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लेकर आए उसका हम इक़रार करते हैं और जिस ने इस से इन्कार किया उसे हम काफ़िर क़रार देते हैं और उससे जिहाद करते हैं। इसके बाद वाज़िह हो कि अल्लाह तआला ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपनी जनाब से हक़ देकर अपनी मख़लूक़ की तरफ़ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला और अल्लाह की तरफ़ उस के हुक्म से बुलाने वाले और एक मुनव्वर कर देने वाले सूरज के तौर पर भेजा ताकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसे डराएं जो ज़िंदा हो और काफ़िरों पर फ़रमान सादिक़ आ जाए। अल्लाह तआला ने इस शख़्स को हक़ के साथ हिदायत दी जिसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़बूल किया और जिसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पीठ फेर ली उससे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस वक़्त तक जंग की कि वे अपनी इच्छा से और विवश हो कर इस्लाम में आ गया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वफ़ात पा गए बाद इस के कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह के हुक्म को नाफ़िज़ फ़र्मा लिया और उम्मत की ख़ैर ख़्वाही कर ली और जो ज़िम्मेदारी आप पर थी उसे पूरा कर लिया और अल्लाह ने आप पर और इस्लाम लाने वालो पर अपनी इस किताब में जो उसने नाज़िल फ़रमाई इस बात को ख़ूब खोल कर वर्णन कर दिया। इसलिए फ़रमाया اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ (अल् ज़ुमर : 31) अर्थात यक़ीनन तू भी मरने वाला है और यक़ीनन वे भी मरने वाले हैं। तथा फ़रमाया وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ (अम्बिया - 35) और हमने किसी बशर को तुझसे पहले हमेशगी नहीं दी। اَفَاۡئِنۡ مِّتَّ فَهُمُ الۡخٰلِدُوۡنَ (अम्बिया : 35) अत: यदि तू मर जाए तो क्या वे हमेशा रहने वाले होंगे? मज़ीद इसके मोमिनों से फ़रमाया مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوۡلٌ ۚ قَدۡ خَلَتۡ مِنۡ قَبۡلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَاۡئِنۡ مَّاتَ اَوۡ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنۡ يَّنْقَلِبۡ عَلٰى عَقِبَيۡهِ فَلَنۡ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيۡـًٔا ؕ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيۡنَ (आले इमरान : 145) और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नहीं हैं परन्तु एक रसूल यक़ीनन इस से पहले रसूल

गुज़र चुके हैं। अत: यदि ये वफ़ात पा जाए या क़तल हो जाए तो तुम अपनी एड़ीयों के बल फिर जाओगे? और जो भी अपनी एड़ीयों के बल फिर जाएगा वह अल्लाह को कुछ भी नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेगा और अल्लाह यक़ीनन शुक्रगुज़ारों को प्रतिफल देता है। फिर आप लिखते हैं अत: वे जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इबादत किया करता था वे जान ले कि मुहम्मद तो फ़ौत हो चुके और वे जो वाहिद-ओ-यगाना लाशरीक अल्लाह की इबादत किया करता था उसे मालूम हो कि अल्लाह उस की घात में लगा हुआ है। वह ज़िंदा है और क़ायम दाइम है। वह नहीं मरेगा। उसे ऊँघ और नींद नहीं आती। वह अपने कामों का मुहाफ़िज़ है। अपने दुश्मन से इंतिक़ाम लेने वाला है और उसे सज़ा देने वाला है। मैं तुम्हें अल्लाह के तक़्वा की और तुम्हारे इस सौभाग्य की और नसीब के हुसूल की जो अल्लाह के हाँ तुम्हारे लिए निर्धारित है और वह तालीम जो तुम्हारा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तुम्हारे पास लेकर आया इस पर अमल करने की तुम्हें ताकीद करता हूँ और यह कि तुम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की राहनुमाई से राहनुमाई हासिल करो और अल्लाह के दीन को मज़बूती से पकड़े रखो क्योंकि हर वह व्यक्ति जिसे अल्लाह हिदायत न दे वह गुमराह है और हर वह शख़्स जिसे वे न बचाए वे आज़माईश में पड़ेगा और हर वे शख़्स जिसकी वे मदद न फ़रमाए वे बेयार-ओ-मददगार है। अत: जिसे अल्लाह हिदायत दे वही हिदायत याफताह है और जिसे वह गुमराह क़रार दे वह गुमराह है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا (अल् कहफ़ : 18) जिसे अल्लाह हिदायत दे वही हिदायत पाने वाला है और जिसे वे गुमराह ठहरा दे तो उसके हक़ में कोई हिदायत देने वाला दोस्त नहीं पाएगा। आप आगे लिखते हैं कि और उस का दुनिया में क्या हुआ कोई अमल उस वक़्त तक क़बूल नहीं किया जाएगा जब तक वे इस दीन इस्लाम का इक़रार न कर ले और न ही आख़िरत में इस की तरफ़ से कोई मुआवज़ा और बदला क़बूल किया जाएगा और मुझ तक यह बात पहुंची है कि तुम में से कुछ ने इस्लाम का इक़रार करने और इस पर अमल करने के बाद अल्लाह तआला को धोखा देते हुए और इस के मुआमले में जहालत बरतते हुए और शैतान की बात मानते हुए अपने दीन से इर्तिदाद इख़तियार कर लिया है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ۭ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ۭ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا (अल् कहफ़ : 51) और जब हमने फ़रिश्तों को कहा कि आदम के लिए सजदा करो तो सबने सजदा किया सिवाए इबलीस के वह जिन्नों में से था। अत: वह अपने रब के हुक्म से पीछे हो गया। तो क्या तुम उसे और इस के चेलों को मेरे सिवा दोस्त पकड़ कर बैठोगे जबकि वे तुम्हारे दुश्मन हैं। ज़ालिमों के लिए तो यह बहुत ही बुरा बदल है।

तथा फ़रमाया। اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ۭ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ (फ़ातिर : 7) निसंदेह शैतान तुम्हारा दुश्मन है अत: इसे दुश्मन ही बनाए रखो। वह अपने गिरोह को महिज़ इस लिए बुलाता है ताकि वह भड़कती आग में पड़ने वालों में से हो जाएं। आप इस ख़त का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं। और मैंने मुहाजिरीन अंसार और हुस्न-ए-अमल से पैरवी करने वाले ताबेन के लश्कर पर अमुक आदमी को मुक़र्रर कर के तुम्हारी तरफ़ भेजा है और मैंने उसे हुक्म दिया है कि वह न तो किसी से जंग करे और न उसे उस वक़्त तक क़तल करे जब तक वह अल्लाह के पैग़ाम की तरफ़ बुला न ले।

फिर जो इस पैग़ाम को क़बूल कर ले और इक़रार कर ले और बाज़ आ जाए और नेक अमल करे तो इस से क़बूल करे और इस पर इस की सहायता करे और जिसने इन्कार किया तो मैं ने उसे हुक्म दिया है कि वह इस से इस बात पर जंग करे और जिस पर क़ाबू पाए उनमें से किसी एक को भी बाक़ी रहने न दे और या वह उन्हें आग से जला डाले और हर तरीक़ से उन्हें क़तल करे और औरतों और बच्चों को क़ैदी बना ले और किसी से इस्लाम से कम कोई चीज़ क़बूल न करे। फिर जो उसकी अनुसरण करे तो यह उस के लिए बेहतर है और जिसने उसे तर्क किया तो वह अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकेगा और मैंने अपने पैग़ाम्बर को हुक्म दिया है कि वह मेरे इस ख़त को तुम्हारे हर मजमा में पढ़ कर सुना दे और अज़ान ही इस्लाम का ऐलान है। अत: जब मुस्लमान अज़ान दें और वह भी अज़ान दे दें तो उन पर हमला से रुक जाएं और यदि वह अज़ान न दें तो उन पर हमला जलद करो और जब वे अज़ान दे दें तो जो उन पर फ़रायज़ हैं उनका मुतालिबा करो और यदि वे इन्कार करें तो उन पर जल्द हमला करो और यदि इक़रार कर लें तो उनसे क़बूल कर लिया जाए।

(उद्धरित सिर्रुल खिलाफ़ा उर्दू तर्जुमा अरबी इबारत मुद्रित नज़ारत इशात पृष्ठ 190 से 194 हाशिया)

बहरहाल इस बारे में जो तफ़सील थी कि क्यों उनसे जंग हुई और क्यों सबसे यह व्यवहार किया गया, तो यह इसलिए कि ये लोग जंग करने वाले थे। मुस्लमानों पर जंग ठूंसने वाले थे और न केवल जंग करते थे बल्कि ज़ुलम भी करने वाले थे और जो उन के इलाक़ों में निहत्ते मुस्लमान थे उन पर ज़ुलम कर रहे थे।

दूसरा ख़त जो हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन सब उमरा-ए-लश्कर जिनकी संख्या ग्यारह थी के नाम तहरीर फ़रमाया उन उमरा का वर्णन हो चुका है। वह ख़त उन लश्करों के उमरा के नाम था। वह निमंलिखित है।

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम यह फ़रमान अबू बक़र ख़लीफ़ा रसूल सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से अमुक शख़्स के लिए लिखा गया है और जब उन्होंने उसे मुस्लमानों की फ़ौज के साथ मुर्तद होने वालों से लड़ने के लिए रवाना किया अर्थात अमीर का नाम उस पर लिखा गया था। उन्होंने इस अमीर को ताकीदी हुक्म दिया है कि वह हर मुआमले में ज़ाहिर और बाहर में अल्लाह का तक़्वा इख़तियार करे जहां तक उस की इस्तिताअत है और इस को अल्लाह के मुआमले में प्रयास का और उन लोगों से जिहाद का हुक्म दिया है जिन्हों ने अल्लाह से पीठ फेर ली और इस्लाम से रुजू करते हुए शैतानी आरज़ूओं को इख़तियार कर लिया है। सबसे पहले उन पर इतमाम-ए-हुज्जत करे। उन्हें इस्लाम की तरफ़ दावत दें। यदि वे इस को क़बूल कर लें तो उन लोगों से लड़ाई से रुक जाए और यदि वे इस को क़बूल न करें तो उन पर फ़ील-फ़ौर हमला करे यहां तक कि इस के सामने झुक जाएं। फिर वे उन लोगों को उनके हुक़ूक़ और फ़रायज़ बताए और वे उनसे वसूल करे जो उन पर फ़र्ज़ है और उन्हें दे जो उन के हुक़ूक़ हैं। वे उन लोगों को मोहलत न दे अर्थात ऐसी मोहलत जिस से वे जंग के लिए तैयार हो कर मुस्लमानों पर हमला कर दें। वे मुस्लमानों को उनके दुश्मनों से लड़ाई करने से न रोके और मुस्लमान यदि समझते हैं कि ये लोग ऐसे हैं कि बाज़ नहीं आएँगे और वे लड़ना चाहते हैं तो उनको जंग से न रोको। ये हुक्म उन लीडरों को दिया जिन्हें इस इलाक़े के लोग ज़्यादा जानते थे। अत: जिसने अल्लाह के हुक्म को क़बूल किया और उसकी फ़रमांबर्दारी की तो उस की ये बात क़बूल करे और मारूफ़ तरीक़ पर उस की सहायता करे और सिर्फ उस से जंग की जाएगी जिसने इस इक़रार के बाद अल्लाह का इन्कार किया कि जो अल्लाह की जानिब से आया था। यदि वे दावत को क़बूल कर ले तो उस पर कोई इल्ज़ाम नहीं होगा और अल्लाह उस से हिसाब लेने वाला है बाद इस के जो उसने छुपाया। और जिसने अल्लाह के पैग़ाम को क़बूल नहीं किया तो इस से लड़ाई की जाए और इस को क़तल कर दिया जाए जहां भी वे हो और वह ख़ाह कितना ही मालदार क्यों न हो। किसी से कोई चीज़ क़बूल न की जाएगी जो वे दे सिवाए इस्लाम के।

अत: जिसने इस्लाम क़बूल कर लिया और इक़रार कर लिया तो उस से क़बूल किया जाए और उस को इस्लामी तालीमात सिखाई जाएं और जिसने इन्कार किया अर्थात मुस्लमान हो के मुर्तद हो गए। फिर लड़ाईयां कर रहे हैं तो इस्लामी तालीमात के ख़िलाफ़ कर रहे हैं उनको बताओ कि इस्लाम क्या है, हक़ीक़त क्या है, तुम मुस्लमान होने का दावा कर के फिर हुकूमत के ख़िलाफ़ जंग नहीं लड़ सकते। जिसने इन्कार किया तो इस से लड़ाई की जाए। यदि अल्लाह उसे उन पर फ़तह अता करे तो उनको बुरी तरह असलाह और आग के माध्यम से क़तल किया जाएगा। फिर अल्लाह जो इस को माल अता फ़रमाए तो वह इस को तक़सीम कर दे सिवाए पांचे भाग के। वह हमें पहुंचाएगा। और वह सिपहसालार अपने साथियों को जल्दी और फ़साद से रोके और उनमें कोई ग़ैर आदमी दाख़िल न करे जब तक कि वे जान न ले कि इस में कैसी सलाहीयत है। यह न हो कि वे जासूस हो। अर्थात किसी शख़्स को दाख़िल कर लो और वे जासूस हो।(सही तरह छान कर के, छान फटक कर के लेना) और उनकी वजह से मुस्लमानों पर मुसीबत आ जाए। सफ़र और क़ियाम में मुस्लमानों के साथ नरमी और मियानारवी इख़तियार करे और उनकी ख़बर-गीरी करता रहे। लश्कर के एक हिस्सा को दूसरे से जल्दी करने का हुक्म न दे। मुस्लमानों के साथ बरताव और गुफ़तार में ख़ुशखुलक़ी और नर्म लहजा

इख़तियार करे।

(अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 258-259 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

अब कुछ बातें ऐसी भी हैं जिनकी वज़ाहत करनी पड़ती है लेकिन वज़ाहत नहीं की गई। इस वजह से कई दफ़ा इस्लाम का ग़लत तास्सुर भी पैदा हो जाता है। इस की वज़ाहत पिछले ख़ुतबा में मैं कर चुका हूँ कि ये सब मुर्तद होने वालों ऐसे थे जिन्हों ने जंग की, लड़ने वाले थे और न सिर्फ जंग की बल्कि जो मुस्लमान उनके इलाक़ों में थे उन पर उन्होंने ज़ुलम भी किया, उनको मारा, उनको जलाया। उनके घरों को जलाया, उनको ख़ुद भी जला दिया। तो उनके ख़िलाफ़ फिर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि ज़रूर बदला लेना है और उनको इसी तरीक़ से फिर जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी ख़त को quote किया है कि इसी तरीक़ से फिर उनको भी सज़ा देनी है क्योंकि फिर बदला लेने के लिए क़ुरआन शरीफ़ का भी, अल्लाह तआला का भी यही हुक्म है कि जैसा कोई करता है इस को वैसा ही सज़ा दो। लेकिन इस बात की वज़ाहत एक जगह इन्ही मुसन्निफ़ डाक्टर अली मुहम्मद सलाबी साहिब ने इस तरह भी लिखी है कि इस में यह वर्णन है कि मुर्तद होने वालों बागियों को आग में जिला दिया जाए। उन्होंने लिखा है कि किसी को जलाने की सज़ा देना तो जायज़ नहीं है। इरशाद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी है कि इन ۔إِنَّ النَّارَ لَا يُعَذِّبُ بِهَا إِلَّا اللهُ कि आग के ज़रीया अज़ाब देना केवल अल्लाह का काम है लेकिन यहां उन्हें जलाने का हुक्म इसलिए दिया गया कि इन बदमाशों ने अहल-ए-ईमान के साथ यही बरताव किया था लिहाज़ा यह क़िसास के तौर पर था।

(उद्धरित सय्यदना अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़सीत और कारनामे पृष्ठ 293 प्रकाशन अल् फुर्कान मुज़फ़्फ़रगढ़ पाकिस्तान)

इसी किताब में हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु के इसी ख़त का वर्णन करते हुए जो वर्णन हुआ है यह भी लिखा है कि जो मुस्लमानों की सफ़ की तरफ़ लौटने से इंकारी हो और इर्तिदाद पर डट जाए वह लड़ने वालों में से है उस पर हमला करना ज़रूरी है इस को क़तल कर दिया जाए या जला दिया जाए।

(उद्धरित सय्यदना अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़सीत और कारनामे, पृष्ठ 294-295 प्रकाशन अल् फुर्कान मुज़फ़्फ़रगढ़ पाकिस्तान)

अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में भी यही फ़रमाया है कि जब तुम्हें मुश्किल में डालते हैं तो उस के मुताबिक़ ही उन को सज़ा दो जिस तरह उन्होंने तुम्हारे साथ किया है। बागियों ने जैसा कि पहले मैं वर्णन कर चुका हूँ पिछले ख़ुतबा में भी, अभी भी मैंने बताया है कि मुस्लमानों को जलाने और उन्हें घिनौने तरीक़े से क़तल करने के जुर्म का इर्तिकाब किया था। उनको आग में जलाया, उनके घरों को जलाया, उनके बच्चों, बीवीयों सबको जलाया, उनके अंगों को काटा गया। इस लिए हज़रत अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने इसी तरह उनको क़तल करने का हुक्म दिया था कि जो इस में शामिल थे उनसे वही सुलूक करना है जो उन्होंने मुस्लमानों के साथ किया था।

बहरहाल यह ज़िक्र जो है वे आगे भी इंशा अल्लाह वर्णन होगा। रमज़ान में शायद दूसरे ख़ुत्बे भी बीच में आते रहेंगे। हो सकता है वक़्त लग जाए लेकिन बहरहाल जो भी आइन्दा ख़ुतबा उस पर आएगा इस में आइन्दा वर्णन, इस की तफ़सील वर्णन होगी।

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 103 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 1 का शेष

مَلَكًا رَّسُوْلًا

(बनी इस्राईल : 11) यदि दुनिया में सब फ़रिश्ते ही फ़रिश्ते होते अर्थात सब के सब इन्सान नेक होते तो हम उनमें से हर एक शख़्स पर अपना कलाम नाज़िल करते अर्थात इस सूरत में एक नबी क़ौम की तरफ़ न भेजा जाता बल्कि सब ही नबी हो जाते और इन्कार और कुफ़्र का सवाल ही नहीं पैदा होता। परन्तु न दुनिया सबकी सब नेक बनी न ख़ुदा तआला ने नबियों के सिलसिला को बंद किया।

هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ मज़मून के दूसरे पहलू को लिया कि जो विरोध करते हैं उन के लिए तेरा यह काम है कि क़ुरआन-ए-करीम के अनुसार उनके विरोध दूर करे और जो मोमिन हैं उन के लिए तरक़्क़ी के मदारिज और रहमत के हुसूल का माध्यम इस क़ुरआन को बनाए ।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4, पृष्ठ 189 प्रकाशन 2010 क़ादियान)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान)

अहमदी विद्यार्थी ध्यान दें
(जामिआ अहमदिया क़ादियान में प्रवेश के लिए)

जामिआ अहमदिया क़ादियान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा स्थापित किया हुआ वह पवित्र संस्थान है जहां से अब तक सैंकड़ों उल्मा और मुबल्लेग़ीन शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं और इस्लाम की सच्ची शिक्षा को दुनिया के किनारों तक पहुंचाने का कर्तव्य अदा कर रहे हैं। सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने भी कई अवसरों पर अहमदी विद्यार्थियों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के क़ायम करदा मुक़द्दस दीनी संस्थान से शिक्षा प्राप्त करके सिलसिला की ख़िदमत की तरफ़ ध्यान दिलाया है। इस लिए सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के आदेशों की रोशनी में ज़्यादा से ज़्यादा वाकफ़ीन नौ और ग़ैर वाकफ़ीन नौ विद्यार्थियों को जामिआ अहमदिया में दाख़िला लेकर दीनी तालीम हासिल करके सिलसिला की ख़िदमत के लिए आपने आपको पेश करना चाहिए।

शैक्षणिक वर्ष 2022-2023 ई. के लिए जामिआ अहमदिया में दाख़िला की कार्रवाई अप्रैल के महीने 2022 ई. से शुरू हो गई है। वर्तमान हालात में जामिआ अहमदिया में दाख़िला के इच्छुक विद्यार्थियों के दाख़िला की कार्रवाई ऑनलाइन ही की जा रही है। इस लिए वे विद्यार्थियों जो जामिआ अहमदिया में दाख़िला लेना चाहते हैं वे विभाग वक़्फ़-ए- नौ भारत (नज़ारत तालीम) से सम्पर्क करें और जल्द से जल्द जामिआ अहमदिया का दाख़िला फ़ार्म भर करके दफ़्तर वक़्फ़-ए- नौ भारत (नज़ारत तालीम) में मेल के माध्यम से या डाक से भिजवाएं। दाख़िला की शर्तों के लिए विभाग वक़्फ़-ए-नौ भारत (नज़ारत तालीम) से सम्पर्क किया जा सकता है।(सदर नैशनल कैरीयर प्लैनिंग कमेटी वक़्फ़-ए-नौ भारत)

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेन-स्त्रेरेहिल अज़ीज़ की आयरलैण्ड की यात्रा, सितम्बर 2014 ई (भाग-6)

डबलिन शहर की ओर यात्रा

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मैं अपने ख़ुतबा जुमा में बता चुका हूँ कि इस्लाम की सही और हक़ीक़ी शिक्षा दूसरों तक पहुँचाओ। मैंने उन्हें हुक़ूक़ अल्लाह और हुक़ूकु ईबाद की अदायगी के बारे में बताया है कि यदि आप लोग इन हुक़ूक़ की अदायगी करने वाले होंगे तो फिर किसी किस्म का उपद्रव नहीं होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मेरा संदेश यह है कि संसार में प्रत्येक ओर ही फ़साद है। केवल मुस्लमान देश Involve नहीं हैं बल्कि कुछ दूसरे देशों में भी यह फ़साद उपस्थित है। इस्टर्न यूरोप के देशों में भी है और समस्त संसार इस फ़साद की लपेट में आ सकता है। अत: मेरा संदेश यही हैकि सब्र-ओ-तहम्मुल का प्रकट करें। एक दूसरे को समझें। आपस में एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करें और अमन और आपसी प्रेम का बनाएं। अन्यथा संसार में एक महान तबाही आएगी जिसको क़ाबू करना असम्भव हो जाएगा। और ये तबाही तीसरी जंग अज़ीम की सूरत में प्रकट होगी।

इसके बाद आयरलैंड के नैशनल अख़बार The Irish Times के प्रतिनिधि जर्नलिस्ट Lorna Siggins ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से इंटरव्यू लिया।

प्रश्न : जर्नलिस्ट ने प्रश्न किया कि हमें दो किस्म का इस्लाम नज़र आ रहा है । एक रिपोर्ट के अनुसार तीन हज़ार के क़रीब मुस्लमान जिहाद के लिए सीरिया इत्यादि गए हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि : इन लोगों को ग़लत तरीक़ पर गाईड किया गया है। ये Frustrated हैं और हालात से तंग आए हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि एक समय ऐसा आएगा कि इस्लाम का केवल नाम बाक़ी रह जाएगा। लोग नाम के मुस्लमान होंगे। मस्जिदें देखने में आबाद तो होंगी परन्तु हिदायत से ख़ाली होंगी तो उस समय ख़ुदा तआला एक रीफ़ारमर भेजेगा जो मसीह और महदी होगा और इस्लाम की असली और हक़ीक़ी शिक्षा को ज़िंदा करेगा और इस्लाम का संदेश संसार को पहुंचाएगा। और वह मुस्लमानों को भी और दूसरों को भी एक ही दीन पर जमा करेगा

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब यह भविष्यवाणी फ़रमाई तो इस आने वाले मसीह और महदी की सदाक़त के लिए निशानात भी निर्धारित फ़रमाए। इन निशानात में से एक निशान यह था कि सूरज और चांद को रमज़ान के महीना में विशेष दिनों में और मुक़र्ररा तारीख़ों में ग्रहण लगेगा इस लिए ये ग्रहण 1894 में लगा जो संसार के पूर्व की ओर हिस्सा ने देखा। फिर अगले साल 1895 ई. में संसार के पश्चिमी हिस्सा में लगा। ये आपकी सदाक़त का और ख़ुदा की ओर से होने का एक बहुत बड़ा निशान था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: यदि इन झगड़ों और मसायब से बचना है तो मुस्लमान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार करें। यदि मुस्लमान स्वीकार कर लें तो बच सकते हैं अन्यथा ये लोग ज़ाए हो जाऐंगे

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : हम अहमदी इस्लाम की सच्ची और वास्तविक शिक्षाओं पर अनुकरण कर रहे हैं और प्रत्येक वर्ष लाखों लोग अहमदियत में दाख़िल हो रहे हैं।

जर्नलिस्ट के इस प्रश्न पर कि क्या आप लोग ग़ैर मुस्लिमों को भी मस्जिद में इबादत करने देंगे

इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

हमारी मस्जिदें सब के लिए खुली हैं। सब दूसरे धर्मों के लिए खुली हैं। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दूसरे धर्मों के लिए मस्जिदें खोली हैं तो मैं किस तरह साहस कर सकता हूँ कि दूसरे धर्मों वालों को आने से रोकूँ। अत: यह मस्जिद प्रत्येक धर्म वाले के लिए खुली है और हमेशा खुली रहेगी।

जर्नलिस्ट ने एक प्रश्न यह किया कि आज रात के ऐडरैस में आपका क्या संदेश होगा।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हमारा आज भी अमन का वही संदेश है जो हम पहले से पूरी संसार में दे रहे हैं और हमारा संदेश संसार के समस्त किनारों तक पहुंच चुका है अब गालवे, आयरलैंड संसार का किनारा है यहां भी संदेश पहुंच चुका है और यहां से संसार के किनारों तक पहुंच रहा है।

जर्नलिस्ट ने कहा कि गालवे तो आयरलैंड का केंद्र है। सैंटर में है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हम सैंटर से किनारों तक और किनारों से सैंटर तक अमन-ओ-सलामती का संदेश पहुंचा रहे हैं

ये दोनों इंटरव्यू लगभग पंद्रह मिनट तक जारी रहे। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने अपार्टमंट में तशरीफ़ ले गए

(उद्धरित अख़बार बदर उर्दू 16-23 अक्तूबर 2014)

26 सितम्बर 2014 शुक्रवार (शेष रिपोर्ट आगे)

मस्जिद मर्यम की उद्घाटन समारोह

आज शाम मस्जिद मर्यम के उद्घाटन के हवाला से मस्जिद के बाहरी सेहन में मारकी लगाकर एक समारोह Reception का आयोजित किया गया था। सात बजकर चालीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की मस्जिद मर्यम में तशरीफ़ आवरी हुई। हुज़ूर अनवर ने नमाज़ मग़रिब और ईशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ समारोह में शामिल होने के लिए मारकी में तशरीफ़ आए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की आमद से पूर्व लगभग सभी मेहमान मारकी में पहुंच चुके थे

इस समारोह में शामिल होने करने वाले मेहमानों में

मेंबर पार्लियामेंट आयरलैंड

Hon. Eamon'o Cuiv मेंबर पार्लियामेंट आयरलैंड

Hon. Joanna Tuffy

डिप्टी स्पीकर और मेंबर नैशनल पार्लियामेंट

Hon. Michael P.Kittमेंबर नैशनल पार्लियामेंट

Hon. Darek Nolanमेंबर नैशनल पार्लियामेंट

Hon. Robert Dowds सैनेटर

Hon. Ms. Hildgard Naughtonसैनेटर

Hon. Trevor o Clochartaighप्रतिनिधि आफ़ गालवे

Father Martin Whelanचीफ़ सपरंटंडनट गालवे पुलिस

Mr. Thomas Curleyमेयर आफ़ सिटी कोंसल

Mr. Donal Lyons हियूमन राईट्स बैरिस्टर

Garry o Hallorn

इसके अतिरिक्त पाँच कौंसलरज़, प्रोफ़ैसर्ज़ , अध्यापक, डाक्टरज़, इंजीनीयर्ज़, वकील और जीवन के विभिन्न विभागों से सम्बन्ध रखने वाले एक सौ अधिक मेहमान शामिल हुए।

इस समारोह का आरंभ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ जो हाफ़िज़ रशीद अख़तर साहब ने की। इसके बाद इसका अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद एक स्थानीय अहमदी यूसुफ़ Pender साहब ने प्रस्तुत किया।

इसके बाद नैशनल सदर जमाअत आयरलैंड आदरणीय डाक्टर अनवर अहमद देश साहब ने मस्जिद मर्यम का परिचय प्रस्तुत किया। और इसके बाद इस समारोह

में शामिल निमंलिखित मेहमानों ने मुख़्तसर ऐडरैसिज़ प्रस्तुत किए।

मेहमानों के संक्षिप्त भाषण

Mr. Garry O' Halloran जो कि हियूमन राईट्स बैरिस्टर हैं उन्होंने उद्घाटन समारोह के अवसर पर सबसे पहले अपना ऐडरैस प्रस्तुत किया। उन्होंने आयरलैंड की रिवायत के अनुसार आइरिश भाषा में हुज़ूर अनवर को कहा कि हम आपको लाखों करोड़ों बार स्वागतम कहते हैं। इसके बाद उन्होंने कहा

ख़लीफ़ा के साथ मेरी पहली मुलाक़ात उस समय हुई जब उन्होंने यूरोपीयन पार्लियामेंट के अवसर पर भाषण फ़रमाया था। ख़लीफ़तुल मसीह ने जिस तरह सैंकड़ों सियासतदानों, पार्लियामेंट के सदस्यों और मुस्लमानों और ग़ैर मुस्लमानों से भाषण फ़रमाया में इस से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मैं इस बात का गवाह हूँ कि ख़लीफ़तुल मसीह भी एक जिहाद कर रहे हैं। परन्तु आपका जिहाद मुहब्बत से भरा हुआ है। आप का जिहाद "जिहाद अल् सैफ़" क बजाय "जिहाद बिलकलम है। और यहां आज शाम ख़लीफ़ा की मौजूदगी में गालवे में इस समारोह में शामिल होना मेरे लिए अत्यधिक ख़ुशी और गर्व की बात है।

उन्हों ने कहा अहमदिया जमाअत के साथ बहैसीयत बैरिस्टर के काम करने का अनुवभ बहुत अच्छा रहा है। पाकिस्तान में अहमदी लोग एक "मुजरिम की हैसियत रखते हैं और मैं उनका दिफ़ा करता हूँ जब आयरलैंड की हुकूमत उनकी दरख़ास्तें मुस्तर्द करके उन्हें वापस पाकिस्तान भिजवाने को कहती है। आइरिश हुकूमत के इदारे कहते हैं कि पाकिस्तान में जनतंत्र है। पाकिस्तान में पुलिस की फ़ोर्स उपस्थित है। पाकिस्तान में अदालत का निज़ाम उपस्थित है। परन्तु पाकिस्तान में यदि कोई जज क़ानून की पैरवी करते हुए उसे लागू करेगा तो तौहीन-ए-रसालत जैसे काले क़ानून की मौजूदगी में वह वास्तव में अहमदियों पर अत्याचार कर रहा होगा। क्योंकि पाकिस्तान में यदि कोई अहमदी अपने आपको मुस्लमान कहता है तो सज़ा-ए-मौत को दाअवत दे रहा होता है। और उन हालात में जिस तरह अहमदी अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करते हैं वह देखकर मैं सख़्त हैरान होता हूँ। मैंने कभी किसी अहमदी को अत्याचार का उत्तर अत्याचार से देते नहीं देखा बल्कि मैंने अहमदियों के दिलों में अत्याचारियों के विरुद्ध नफ़रत भी नहीं देखी।

उन्होंने अपने ऐडरैस के आख़िर में एक मर्तबा फिर आयरलैंड की रिवायती भाषा में हुज़ूर अनवर को स्वागतम कहा।

इसके बाद अगले मेहमान स्पीकर Deputy Eamon o Cuiv थे। वह मंझे हुए सियास्तदान हैं और 1989 में पहली मर्तबा बतौर सैनेटर उन का इंतिख़्वाब हुआ। वह मिनिस्टर आफ़ स्टेट भी रह चुके हैं 2002 से 2010 ई. बतौर Minister of Community and Rural Affairs काम करते रहे और 2010 में Minister of Social Protection बने। उन्हों ने अपने ऐडरैस में कहा। सबसे पहले में इस महत्वपूर्ण अवसर पर ख़लीफतुल मसीह को गालवे में सैंकड़ों बार स्वागतम कहता हूँ। 2010 ई. में मुझे इस मस्जिद का नींव का पत्थर रखने के समारोह में शमूलियत का अवसर मिला था। और मुझे बहुत ख़ुशी हो रही है कि आज वही मस्जिद मुकम्मल हो गई है और हम सब उसके उद्घाटन के लिए यहां जमा हुए हैं।

उन्होंने कहा ख़लीफतुल मसीह का गालवे में दूसरी मर्तबा पधारना हमारे लिए अत्यधिक सम्मान की बात है। हमें आशा है कि आपका आयरलैंड की यह यात्रा अत्यधिक सफ़ल हो।

उन्होंने कहा मुझे याद है जब पहली मर्तबा मुझे जमाअत अहमदिया की ओर से Peace Conference में शामिल होने का दावतनामा मिला तो मैं जमाअत अहमदिया के माटो मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं से बहुत प्रभावित हुआ। तब से लेकर अब तक इस जमाअत ने साबित किया है कि यह जमाअत अपने आला उद्देश्य के अनुसार ही काम कर रही है। इस जमाअत ने जिस तरह विश्वयापी धार्मिक कान्फ्रैंसज़ को आयोजित किया और विभिन्न धर्मों को एक प्लेटफार्म पर जमा किया इस से में बहुत प्रभावित हुआ हूँ। और मुझे बहुत ख़ुशी महसूस हो रही है कि जमाअत अहमदिया को निरंतर एक मस्जिद बनाने की तौफ़ीक़ मिली है जिस में वह आज़ादी से इबादत कर पाएँगे। हम जमाअत अहमदिया पर पाकिस्तान में जो मज़ालिम हो रहे हैं इस हवाला से भी काम करते रहेंगे और मुझे आशा है कि विश्वव्यापी दबाव के परिणाम में पाकिस्तान में अहमदियों पर होने वाले मज़ालिम का बाब बंद हो जाएगा

उन्होंने कहा :

इसी तरह इस मस्जिद का नाम मर्यम रख कर भी आपने इस बात को उजागर किया है जो हमारे और आपके बीच मुश्तर्क है। और एक दूसरे के मध्य अंतर तलाश करने की बजाय प्रेम को एहमीयत दी है। यह आपकी ओर से बहुत सद्भावना का प्रकटन है। आख़िर में इस फंक्शन पर दावत देने का एक मर्तबा फिर शुक्रिया अदा करता हूँ और आशा करता हूँ कि हम जमाअत अहमदिया के साथ मिल कर आइन्दा भी काम करते रहेंगे और जमाअत अहमदिया के अमन के संदेश को फैलाने के लिए सहयोग करते रहेंगे।

अगली मेहमान स्पीकर Deputy Jonna Tuffy थीं जो कि आयरलैंड की राष्ट्रीय असैंबली की मेंबर हैं और जमाअत की क़रीबी मित्र हैं उन्होंने कहा :

सबसे पहले तो मैं इस अवसर पर दावत देने के लिए आपका शुक्रिया अदा करती हूँ। मैं अपने हलक़ा में उपस्थित जमाअत अहमदिया के बहुत से लोगों को जानती हूँ। ये सब अहमदी लोकल सतह पर कामों में बहुत काम करने वाले हैं और हमारे समाज में बहुत महत्वपूर्ण आचरण अदा कर रहे हैं। विशेषता अहमदिया जमाअत की महिलाओं की तंज़ीम प्रत्येक वर्ष चैरिटी इकट्ठी करती है। इसी तरह नौजवान लड़के और लड़कियां भी लोकल कम्यूनिटीज़ में भरपूर हिस्सा लेते हैं और उनकी शिक्षा की ओर ख़ास ध्यान है। इसी तरह जैसा कि अब आयरलैंड में विभिन्न सक़ाफ़्तों और मुल्कों से सम्बन्ध रखने वाले लोगों की बढ़ोतरी होती चली जा रही है इस समय विश्व्यापी धर्मों के प्रोग्रामों का आयोजित होना बहुत एहमीयत रखता है।

अगले मेहमान स्पीकर Father Martin Whelan थे जोकि बिशप आफ़ गालवे की नुमाइंदगी में आए थे। वह स्वयं भी बिशप हैं। उन्हों ने कहा : बिशप आफ़ गालवे और गालवे की कैथोलिक कम्यूनिटी की नुमाइंदगी में इस समारोह में शामिल होना मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है। बाइबल क जन्म मैं ख़ुदा ने इब्राहीम से कहा कि कई नसलों के लिए तेरी हैसियत जद्द-ए-आला की होगी। मैं तुम्हें बहुत सारी नसलें दूँगा। मैं तेरे साथ एक समझौता करूंगा और यह समझौता तेरी समस्त नसलों के लिए होगा।

आज हम देखते हैं कि असंख्य यहूदी, ईसाई और मुस्लमान इब्राहीम के ख़ुदा की इबादत करते हैं। इसी पृष्ठभूमि की रोशनी में कैथोलिक चर्च' मस्जिद मर्यम को स्वयं आमदीद कहता है ताकि अहमदी मुस्लमान अमन और आज़ादी के साथ ख़ुदा की इबादत कर सकें। अल्लाह तआला आपकी जमाअत को हमेशा अमन और सफलताओं से रखे।

इस समारोह में गालवे शहर और गालवे काओनटी की एक डवीज़न Garda के पुलिस चीफ़ सपरंटेंडनट Thomas Curley भी शामिल हुए। उन्होंने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा :

गालवे की निरंतर पहली मस्जिद की उद्घाटन समारोह में शामिल होना मेरे लिए सम्मान की बात है। मैं रुहानी रहनुमा ख़लीफ़ा मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहब को भी इस अवसर पर स्वागतम कहता हूँ और इस क़दर अज़ीम व्यक्ति का हमारे मध्य उपस्थित होना बहुत गर्व की बात है। इस अज़ीम व्यक्ति की यहां मौजूदगी ही इस समारोह की एहमीयत को बताती है।

मुझे बख़ूबी ज्ञान है कि इस्लाम अहमदियत सांप्रदायिकता पर विश्वास नहीं रखती और दूसरे धर्मों को बर्दाश्त करने का दरस देता है। यही कारण है कि आज जमाअत अहमदिया ने इस मस्जिद का नाम हज़रत मर्यम अलैहिस्सलाम के नाम पर रखा है। यह बहुत महत्वपूर्ण अवसर है और मुझे बतौर चीफ़ पुलिस अधीक्षक गालवे बहुत ख़ुशी है कि आपने अपनी मस्जिद के लिए गालवे शहर का चुनाव किया।

आयरलैंड के क़ानून के अनुसार प्रत्येक को अपनी इबादात बजा लाने का हक़ है। मुझे पता चला है कि जमाअत अहमदिया मुस्लमानों की एक अल्पसंख्यक जमाअत है और अन्य मुस्लमानों के हाथ मज़ालिम का शिकार हो रही है परन्तु मैं

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

जमाअत अहमदिया को बहैसीयत पुलिस अफ़्सर होने के संरक्षण की विश्वास देहानी करवाता हूँ।

अगले मेहमान स्पीकर गालवे शहर के मेयर Councillor Donal Lyons थे। उन्हों ने1996 ई. से गालवे सिटी कौंसल के मेंबर हैं और विभिन्न इदारों और कमेटीटियों के मेंबर हैं। इसके अतिरिक्त वह पुलिस कमिशनर भी रह चुके हैं। उन्हों ने अपने ऐडरैस में कहा

सबसे पहले तो मैं जनाब हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहब को गालवे जो कि क़बायल का शहर कहलाता है इस में स्वागतम कहता हूँ। बतौर मेयर के "मस्जिद मर्यम" के उद्घाटन समारोह में शामिल होना मेरे लिए अत्यधिक सम्मान की बात है। गालवे शहर में पहली मस्जिद जिसका नाम "मर्यम" है और जो गालवे शहर और आयरलैंड के लोगों के लिए अमन की अलामत है इस मस्जिद का बनना एक बहुत ही तारीख़ी अवसर है। आज का दिन जमाअत अहमदिया के लिए एक यादगार दिन हैं जो 2010 ई. से जब इस मस्जिद का नींव का पत्थर रखा गया था इस मस्जिद के उद्घाटन का इंतिज़ार कर रहे थे।

उन्हों ने कहा :

आज इस्लामिक और Gaelic हर दो प्रकार के निर्माण के बनने रखने वाली मस्जिद की इमारत का निरंतर उद्घाटन हो रहा है। जमाअत अहमदिया आयरलैंड में इंटर फ़ेथ कान्फ्रैंसज़, क़ुरआन-ए-करीम की नुमाइशें और तब्लीग़ी स्टॉल का बहुत ही आला रंग में आयोजित होना कर रही है और उन प्रोग्रामों के माध्यम से इस्लाम के सम्बन्ध में बहुत सी ग़लत-फ़हमियाँ दूर हुई हैं और समाज में आपसी प्रेम को फ़रोग़ मिला है। मुहब्बत सबके लिए नफ़रत किसी से नहीं एक ऐसा माटो है जो प्रत्येक धर्म को अपनाना चाहिए।

उन्होंने अपने ऐडरैस के आख़िर में कहा

मैं जमाअत अहमदिया को मस्जिद मर्यम के उद्घाटन पर मुबारकबाद देता हूँ। अल्लाह करे कि हमारा शहर अमन और मुहब्बत में प्रगति करता चला जाए। आप सब का शुक्रिया।

भाषण हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़

मेहमानों के इन ऐडरैसिज़ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने इस समारोह में भाषण फ़रमाया

तशह्हुद ताव्वुज़ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ने फ़रमाया :

समस्त आदरणीय मेहमानान अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातहू। आप सब पर अल्लाह तआला की रहमतें और बरकतें हों। इस अवसर पर सबसे पहले तो मैं अपने समस्त मेहमानों का शुक्रिया अदा करना चाहूँगा जो आज हमारे साथ यहां उपस्थित हैं और गालवे में जमाअत अहमदिया मुस्लिमा की इस मस्जिद के उद्घाटन के समारोह में शामिल हैं। इस मस्जिद के उद्घाटन का यह समारोह एक मुस्लमान फ़िर्क़ा की ओर से आयोजित हो रहा है परन्तु इसके अतिरिक्त आप सब लोगों की शमूलियत आपकी कुशादा दिल्ली और दूरदर्शिता का स्पष्ट सबूत है। इस लिए मैं आप सब का बहुत शुक्रगुज़ार हूँ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

मेरे लिए अपनी शुक्र की ये भावनाएं वर्णन करना इस लिए भी ज़रूरी है कि इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने मानने वालों को शिक्षा दी है कि वह एक दूसरे का शुक्रिया अदा करें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तो यहां तक फ़रमाया कि वह व्यक्ति जो दूसरों का शुक्र अदा नहीं करता वह ख़ुदा तआला का भी शुक्रगुज़ार नहीं बन सकता और जो व्यक्ति ख़ुदा तआला का शुक्रगुज़ार न हो वह हक़ीक़ी मोमिन भी नहीं कहला सकता। अत: मेरी शुक्र की ये भावनाएं दरअसल दीनी कर्तव्य है जिसकी शिक्षा मेरे धर्म ने मुझे दी है। फिर जब ये देखते हैं कि आजकल अधिकतर ग़ैर मुस्लिम इस्लाम और मुस्लमानों के बारे में संदेह रखते हैं तो मेरे ये शुक्र के भावनाएं और भी बढ़ जाती हैं। अत: इन समस्त ख़दशात के अतिरिक्त आपकी यहां तशरीफ़ आवरी ने स्वभाविक तौर पर मेरे दिल में आप सबकी इज़्ज़त बढ़ा दी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

यदि आपके दिलों में इस्लाम के बारे में संदेह हैं तो मैं समझ सकता हूँ कि आप के पास इन संदेहों का कारण है क्योंकि अत्यधिक अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि उम्मत-ए-मुस्लिमा बड़े पैमाना पर तज़ाद और फ़साद में पड़ी हुई है बल्कि हम हर-रोज़ देखते हैं कि कुछ मुस्लमान दूसरों के हुक़ूक़ नष्ट कर रहे हैं। इसी तरह हम देखते हैं कि मुस्लमान हुकूमतें अपनी रियाया के हुक़ूक़ अदा नहीं कर रहें और दूसरी ओर अवाम भी ग़ैर जमहूरी और नाजायज़ माध्यमों से हुकूमतों को ख़त्म करने के प्रयास में लगे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ने फ़रमाया :

और हम यह भी देखते हैं कि किस तरह दहश्तगरदों के गिरोह फ़साद फैला रहे हैं और अपने ग़लत कामों और नज़रियात के माध्यम सारे संसार में भय और परेशानी फैला रहे हैं। इन बातों की रोशनी में में बिना देरी के कहता हूँ कि कुछ ऐसे तथाकथित मुस्लमान भी हैं जो इस्लाम के नाम पर अत्यधिक घिनाओने जुर्मों का इर्तिकाब कर रहे हैं। जबकि मैं यह भी स्पष्ट करदूँ कि कुछ मुस्लमान गिरोहों या कुछ मुस्लमान हुकूमतों का यह निंदनीय रवैय्या किसी रंग में या किसी तौर भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं की अक्कासी नहीं करता बल्कि इस्लाम तो वह धर्म है जिसने मुस्लमानों को एक दूसरे के साथ मुहब्बत, प्यार, हमदर्दी और रहम के साथ पेश आते हुए अपनी जीवनियाँ गुज़ारने की शिक्षादी है। केवल मुस्लमानों को आपस में ही इस हमदर्दाना तरीक़ इख़तियार करने की शिक्षा नहीं दी गई बल्कि क़ुरआन-ए-करीम ने तो यह शिक्षा दी है कि अपने दुश्मन के साथ भी ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए जो इन्साफ़ के उसूलों के मुनाफ़ी हो और उनके जायज़ हुक़ूक़ ग़सब करने वाला हो। इस्लाम ने शिक्षा दी है कि प्रत्येक जो इस नाजायज़ तरीक़ को इख़तियार करे गा उसे मोमिन कहलाने का कोई हक़ प्राप्त नहीं होगा और ख़ुदा तआला के हुज़ूर कभी भी मुत्तक़ी और परहेज़गार शुमार नहीं होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

जब क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षाओं का अध्ययन करते हैं तो हमें पता चलता है कि अल्लाह तआला ने रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को एक अद्वितीय और विशेष स्थान से नवाज़ा है। ख़ुदा तआला के निकट आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को "रहमतुल लिलआलमीन" अर्थात समस्त जहानों के लिए रहमत क़रार दिया गया है क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इन्सानियत के लिए प्यार असीमित था और संसार में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दिल में मुहब्बत और हमदर्दी थी चाहे उसका सम्बन्ध किसी भी धर्म से हो :

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

वास्तव में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत और हमदर्दी मानवता का यह मयार था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम निरन्तर कई कई रातें सोने की बजाय अल्लाह तआला के हुज़ूर झुकते हुए सोज़-ओ-गुदाज़ के साथ दुआएं करते गुज़ार देते कि "हे अल्लाह संसार ने तुझे भुला दिया है और इस का क़दम तबाही की ओर है। इस लिए उन्हें सदमार्ग पर चला ताकि उन्हें बचाया जा सके। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ग़म की इस कैफ़ीयत का वर्णन क़ुरआन-ए-करीम में भी मिलता है। दो स्थानों पर आया है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सख़्त तकलीफ़ महसूस करते केवल इस कारण से कि इन्सान ख़ुदा से दूर हो रहा था और अपनी हलाकत और तबाही की ओर जा रहा था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस दुख और ग़म की हालत को देख कर अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि क्या तू इस ग़म के कारण से अपनी जान हलाक कर लेगा कि लोग तेरे संदेश पर कान नहीं धरते!

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

यह वह बेनज़ीर मयार था जिस पर इन्सानियत की ख़ातिर ये ग़म-ज़दा व्यक्ति क़ायम था जिसका ज़र्रा ज़र्रा मुहब्बत और दर्द में डूबा हुआ था। अत: क्या यह एतराज़ किया जा सकता है या यह सोचा जा सकता है कि ऐसा व्यक्ति जो बनीनौ इन्सान को अल्लाह के ग़ज़ब से बचाने के लिए अपनी जान जोखों में डालने वाला हो वह अत्याचार और नाइंसाफ़ी की शिक्षा दे? नहीं कदापि नहीं

(शेष आगे)

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAL
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

पृष्ठ 2 का शेष

तासीरात बिलज़ात नहीं बल्कि अल्लाह तआला के इज़न और आदेश से होती हैं। हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"क़ुरआन-ए-करीम के संकेतों से निहायत सफ़ाई से ज्ञात होता है कि कुछ वे नफ़ूस तय्यबा जो मलायक से नामांकित हैं उनके ताल्लुक़ात तबक़ात समाविया से अलग अलग हैं। कुछ अपनी तासीरात ख़ास्सा से हवा के चलाने वाले और कुछ बारिश के बरसाने वाले और कुछ कुछ और तासीरात को ज़मीन पर उतारने वाले हैं।"

फिर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने एक मज़मून यह वर्णन फ़रमाया है कि इन नक्षत्रों अर्थात सूरज, चांद और सितारों का हमारी ज़मीन के जीव जंतुओं और हैवानात पर दिन रात असर पड़ता रहता है। इसलिए हम देखते हैं कि चांद की रोशनी से फल मोटे होते, सूरज की गर्मी और तपिश से फल पकते और मीठे होते और कुछ हवाएं बकसरत फल लाने का माध्यम होती हैं।

इस विषय में एक मज़मून हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने यह भी वर्णन फ़रमाया है कि जिस तरह फ़रिश्ते ख़ुदा तआला के आदेश से नक्षत्रों पर अपनी तासीरात डालते और नक्षत्रों का हमारी ज़मीन की ज़ाहिरी चीज़ों पर असर होता है इसी तरह मलायका ख़ुदा तआला के आदेश से हमारे दिल-ओ-दिमाग़ पर अपना रुहानी असर भी डालते हैं। इसलिए आप फ़रमाते हैं : "वास्तव में यह अजीब मख़लूक़ात अपने अपने स्थान मैं स्थिर और क़रारगीर है और हिक्मत के साथ कामला ख़ुदावंद-ए-तआला ज़मीन की हर एक मुस्तइद चीज़ को इसके कमाल मतलूब तक पहुंचाने के लिए यह रूहानियात ख़िदमत में लगी हुई हैं। ज़ाहिरी ख़िदमात भी बजा लाते हैं और बातिनी भी। जैसे हमारे अजसाम और हमारी समस्त ज़ाहिरी कुव्वतों पर आफ़ताब और सूरज और अन्य सय्यारों का असर है ऐसा ही हमारे दिल और दिमाग़ और हमारी समस्त रुहानी कुव्वतों पर ये सब फ़रिश्ते हमारी अलग इस्तिदादों के अनुसार अपना अपना असर डाल रहे हैं।"

जहां तक फ़रिश्तों के ज़मीन पर उतरने और इन्सानों से मेल-जोल करने का प्रश्न है तो इस बारे में याद रखना चाहिए कि क़ुरआन-ए-करीम, हदीसे नब्वी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और इर्शादात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से यह बात साबित है कि फ़रिश्तों का ज़मीन पर नुज़ूल उनके वास्तविक वजूद के साथ हरगिज़ नहीं होता। बल्कि अल्लाह तआला के आदेश से मलायका इन्सानों की शक्ल इख़तियार कर के उस के नेक बंदों से मेल जोल करते हैं। इसलिए क़ुरआन-ए-करीम और हदीसों में ऐसे कई वाक़ियात का वर्णन मौजूद है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस मज़मून को वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं :

"यही नफ़ूस नूरानिया कामिल बंदों पर बशक्ल जस्मानी रूम में हो कर ज़ाहिर हो जाते हैं और बशरी सूरत से मुतमस्सिल हो कर दिखाई देते हैं।"

(तौज़ीह मराम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 68 से 72)

प्रश्न : एक बच्ची ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत-ए-अक़्दस में हज़रत ईसाई अलैहिस्सलाम पर बनने वाली डाकूमैंटरी bloodline of christ का वर्णन करके इस में वर्णन कहानी की हक़ीक़त दरयाफ़त की। हुज़ूर अनवर ने अपने पत्र तिथि 21 नवंबर 2019 ई. में इस प्रश्न का निमन्लिखित उत्तर अता फ़रमाया :

उत्तर : इस से पहले भी इस मौज़ू पर कई फिल्में बन चुकी हैं और पुस्तकें भी लिखी जा चुकी हैं। इस डाकूमैंटरी में वर्णन हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम की हिज्रत करने की बात तो ठीक है लेकिन उनके फ्रांस की तरफ़ हिज्रत करने वाली बात दरुस्त नहीं क्योंकि इस ज़माने में फ्रांस में उनके अनुयाईयों की कोई जमाअत नहीं थी। बल्कि उनके क़बायल तो कश्मीर के इलाक़ा में थे। इसलिए उसी तरफ़ उन्होंने हिज्रत की थी। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस अमर को अपनी तसनीफ़ "मसीह हिन्दोस्तान में" में अलग शवाहिद के साथ साबित फ़रमाया है।

प्रश्न : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ हॉलैंड के ख़ुद्दाम की virtual मुलाक़ात तिथि 30 अगस्त 2020 ई. में एक ख़ादिम ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि दुनिया के मौजूदा हालात में हमें farming की तरफ़ अत्याधिकत तवज्जा देनी चाहिए? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस पर फ़रमाया :

उत्तर : प्रश्न यह है कि पहले जब यूरोपियन यूनीयन इकट्ठी हुई है, उन्होंने हर मुल्क में अपना अपना इलाक़ा बांट लिया हुआ है कि तुम फ़रूट उगाओगे, तुम crops उगाओगे, तुम अमुक चीज़ उगाओगे, तुम अमुक चीज़ उगाओगे। तो जब तक यूरोपियन यूनीयन क़ायम है, उस समय तक तो बड़ी अच्छी बात है ये करते रहें। अब हॉलैंड के ज़िम्मा उन्होंने लगाया हुआ है, उनके हाँ dairy products हैं या fruits हैं। और fruits भी ख़ास किस्म के हैं। pears इत्यादि और something like that यू.के brexit के माध्यम निकल गया है, थोड़ी देर बाद जब ये पूरी तरह निकल जाऐंगे तो उन्हें फल मंगवाने के लिए भी मुश्किल पेश आएगी। और wheat crisis भी आजाएगा। तो उनको मुश्किलात पेश आयेंगी, इसलिए यू.के के लिए तो ज़रूरी है कि agriculture पर focus करें और उसको अत्याधिकत develop करने की कोशिश करें और अपने agriculture में self-sufficient बने, grains में भी और vegetables में भी और fruits में भी। जहां तक यूरोप का प्रश्न है तो यूरोप का जो grains है, इस में तक़रीबन वेself-sufficient ही हैं। बल्कि export भी करते हैं। इसी तरह फल इत्यादि हैं। कुछ सबज़ीयां हैं जो tropical इलाक़ों से ये लाते हैं। वह यहां हो नहीं सकतीं अतिरिक्त इसके कि greenhouses बना के वे लगा जाएं। इसलिए बेहतर यही है कि अपने मुल्कों की पैदावार के लिहाज़ से वे करें। यदि यूरोप एक रहेगा तो ठीक है। लेकिन कल को कोई और भी मुल्क यूरोपियन यूनीयन से निकलता है तो फिर उस को मुश्किल पड़ेगी जिस तरह इंग्लिस्तान को मुश्किल पड़ रही है। फिर रशिया जब इकट्ठा था तो उस समय उन्होंने बनाया हुआ था कि अमुक state में गंदुम उगेगी, अमुक में कॉटन उगेगी, अमुक में अमुक crop होगी। और जब वे टूट गए तो फिर उनकी states को भी मसायल पैदा हुए। इसलिए कोशिश ये करनी चाहिए कि इकट्ठे रहें और यदि कहीं chances पैदा होने का इमकान है तो जो हमारे politicians हैं उनको यह सोचने से पहले कि हमने अलग होना है, अपने लोगों की जो staple food है इस को मुहय्या करने के लिए भी पहले सोचना चाहिए कि किस तरह हम यह मुहय्या करेंगे और इस के लिए प्लैनिंग होनी चाहिए। बग़ैर प्लैनिंग के छोड़ दें तो फिर वह हाल होता है जो अब यू.के का होने वाला है। तो सारे यूरोपियन यूनीयन के मुल्कों को देखना चाहिए, बैठना चाहिए, ग़ौर करना चाहिए कि हमारे सारे यूरोप की, जो हमारी यूरोपियन यूनीयन में छब्बीस सत्ताईस मुल्क शामिल हैं उनकी requirement क्या है और इस requirement के हिसाब से हमारी अलग grains की हर साल की produce क्या है और इस produce को हम ने किस तरह मज़ीद बेहतर करना है। तो इस लिहाज़ से ठीक है आप की बात, कोशिश करनी चाहिए। लेकिन यदि उस के बाद फिर crisis आता है और crisis के बाद जंग होती है तो इस में पता नहीं यदि कहीं किसी ने पागलपन में एटम-बम इस्तिमाल कर दिया तो न वहां agriculture रहनी है और न वहां कुछ और चीज़ रहनी है। तो इसलिए अल्लाह तआला ही रहम करे।

प्रश्न : इस मुलाक़ात में एक ख़ादिम ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि छोटे बच्चों की तर्बीयत के लिए किस तरह और क्या तरीक़ इख़तियार किया जा सकता है? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया

उत्तर : बात यह है कि अल्लाह तआला ने तो कहा है कि जब बच्चा पैदा होता है उसी समय तर्बीयत करो। इसी लिए इस्लाम में यह प्रचलित है यह सुन्नत है,

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 19 May 2022 Issue No.20

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी यह फ़रमाया करते थे और फिर हम अमल भी इसी बात पर करते हैं कि जब बच्चा पैदा होता है तो उसके दाएं कान में अज़ान देते हैं और बाएं कान में तकबीर पढ़ते हैं। इसलिए कि अल्लाह तआला का नाम उस के कान में पड़े और तौहीद पर वह क़ायम हो। तो तर्बीयत जो है वह तो अल्लाह तआला ने कहा है कि पहले दिन से शुरू कर दो। यह न देखो कि बच्चा छोटा है इस को समझ नहीं आएगी। बच्चा छोटा है इस को बताओ, कोई चीज़ तुम देते हो तो तुम कहो कि यह हमें अल्लाह तआला ने दी है, अल्लाह तआला ने तुम्हारा इंतिज़ाम किया। अल्लाह तआला ने मेरे दिल में डाला, अल्लाह तआला ने मुझे सहूलत मुहय्या की। हमने तौहीद को क़ायम करना है इस लिए पहली बात तो यह है कि अल्लाह तआला पर उनका ईमान पैदा करो कि जो चीज़ वे हासिल करते हैं, वह अल्लाह तआला उन के लिए उनका इंतिज़ाम करता है। इस तरह अल्लाह तआला पर आहिस्ता-आहिस्ता यक़ीन बढ़ना शुरू होगा। फिर बताओ कि जब अल्लाह तआला हमें चीज़ें देता है तो हम ने अल्लाह तआला का शुक्र भी अदा करना है। फिर कहो कि तुम अभी छोटे हो, तुम्हें पता नहीं, तुम अल्लाह मियां से केवल दुआ किया करो कि अल्लाह तआला हमें इसी तरह इनामात देता रहे, हमारे पर फ़ज़ल करता रहे। और हम बड़े हो गए हैं इसलिए हमें कुछ थोड़ा सा पता लग गया है इसलिए हम अल्लाह तआला के हुज़ूर झुकते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं। जब तुम बड़े होगे तो तुम भी नमाज़ पढ़नी शुरू कर दोगे। फिर जब बच्चा सात साल का होता है यही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उस को बताओ कि तुमने नमाज़ पढ़नी है या नमाज़ फ़र्ज़ है। और आहिस्ता-आहिस्ता उसको दो या तीन या चार जितनी नमाज़ें बच्चा पढ़ सकता है पढ़ता रहे और जब दस का हो जाये, समय matured दिमाग़ हो जाता है, फिर उस को नमाज़ पढ़ने की आदत डाल दो। तो यह शुरू की जो तर्बीयत है, वही है जो बच्चा को आख़िर तक काम देती है। और फिर क़ुरआन-ए-करीम भी बचा पढ़ता है। लेकिन भी stress बच्चे पर न डालो कि तीन साल की उम्र में उसे क़ुरआन-ए-करीम पढ़ाना शुरू कर दो-चार साल की उम्र में वह थक जाए और जब ग्यारह साल की उम्र का हो तो बाहर के माहौल में जाए और आज़ादी उस को हासिल होना शुरू हो जाए। एक दरमियाना रवैय्या इख़तियार करो। बच्चा को समझाओ, अल्लाह तआला की ज़ात पर ईमान दिलवाओ, इस्लाम की सच्चाई का सबूत दो। इस ज़माना में मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दीन की सच्चाई क़ायम करने के लिए भेजा है इस की बातें बताओ। छोटी छोटी कहानियां सुना कर, सहाबा के छोटे छोटे वाक़ियात सुना कर, नबियों के वाक़ियात सुना कर, अल्लाह तआला के जो लोगों पर फ़ज़ल हुए हैं उनकी कहानियां सुना के, जो तुम पर फ़ज़ल हुए हैं उनकी कहानी के interest पैदा करो। तो इस तरह एक मुहब्बत पैदा की जाती है। नेक नीयती से, तवज्जा से माँ बाप बच्चों को समझाते रहें, दीन की तरफ़ लाते रहें तो फिर दीन से वह attach हो जाऐंगे तो फिर ख़ुदा तआला की तरफ़ रुजहान भी होगा, फिर नमाज़ों की तरफ़ तवज्जा भी होगी। लेकिन पंजाबियों की तरह यह कह देना कि बच्चा को छोड़ दो, बड़ा होगा तो आप ही ठीक हो जाएगा। यह काम नहीं चलेगा। अल्लाह तआला ने तो हमें सबक़ दिया कि पहले दिन से तर्बीयत करो। इसलिए

पृष्ठ 1 का शेष

और समस्त नुक़्सानों और हानिकारक वस्तुओं से बचाती हो। अत: इस दुआ में समस्त बेहतरीन मुनाफ़ा जो हो सकते हैं और मुम्किन हैं वह इस दुआ में मतलूब हैं और बड़ी से बड़ी हानिकारक वस्तुएं जो इन्सान को हलाक कर देती है उससे बचने की दुआ है।

मैं बार-बार कह चुका हूँ कि मुनअम अलैहि (जिन पर इनाम किया जाएँ) चार किस्म के लोग हैं। प्रथम नबी। द्वितीय सिद्दीक़। त्रितीय शहीद। चतुर्थ सालेहीन। अत: इस दुआ में जबकि इन चारों गिरोहों की विशेषताओं की मांग की गई है।

(मल्फ़ूज़ात, भाग अव्वल, पृष्ठ 372 प्रकाशन 2018 क़ादियान)

★ ★ ★

"वडा हो के ठीक हो जाएगा" वाली बात कोई नहीं है। बच्ची की तर्बीयत उसकी उम्र के लिहाज़ से करो और अपने नमूने दिखाओ।

प्रश्न : हॉलैंड के ख़ुद्दाम की इसी 30 अगस्त 2020 ई. की virtual मुलाक़ात में एक और ख़ादिम ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि एक ख़ादिम को कौन से काम कम से कम रोज़ाना करने चाहिएं? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : एक ख़ादिम को कम से कम रोज़ाना पाँच नमाज़ें समय पर पढ़ लेनी चाहिऐं। फ़ज्र की नमाज़ फ़ज्र के समय उठ के पढ़ो और यदि नमाज़ सैंटर या मस्जिद क़रीब है तो वहां जाके बाजमाअत पढ़ो। और काम के बाद मग़रिब और इशा की नमाज़ें भी नमाज़ सैंटर में पढ़ें। और काम पर ज़ुहर अस्र की नमाज़ें भी पढ़ें। अपनी पाँच नमाज़ों की पाबंदी कर लें क्योंकि यह बुनियादी आदेश है। यह तो रोज़ाना का काम है, यह काम कर लें। टक्करें नहीं मारनी। इसलिए नमाज़ पढ़ेंगे कि अल्लाह तआला का आदेश है और मैंने इसलिए नमाज़ पढ़नी है तो फिर जो बाक़ी अख़लाक़ हैं वे भी पैदा हो जाऐंगे। जब आप नमाज़ पढ़ते हुए अल्लाह तआला से اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ की दुआ करेंगे तो यह दुआ जब दिल से निकलेगी तो वह यह होगी कि अल्लाह तआला आप को रुहानी मुआमलों में भी الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ पर चलाए, सही गाईड करता रहे और आप सही रस्ता से उधर deviate न करें। और जो अख़लाक़ीयात अल्लाह तआला ने बताए हुए हैं, जो अल्लाह की शिक्षा है उसके ऊपर भी सही चलते रहीं। और जब إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ कहेंगे तो ज़ाहिर है कहेंगे कि हे अल्लाह तआला हम तेरी ही इबादत करना चाहते हैं और तुझसे ही सहायता मांगते हैं, हमारी सहायता कर, हमें उन लोगों से बचा ले जिन को तू ने सज़ा दी और जो सही रस्ते से फिर गए। तो इस की रहमानियत मांगें, उसकी रहीमियत मांगें। और फिर जब संजीदगी से नमाज़ पढ़ रहें होंगे तो केवल दुनिया ही की बातें न मांगें, अगले जहान की भी बातें मांगें। एक ख़ादिम जब संजीदगी से नमाज़ पढ़ लेगा तो समझ लें कि उसने सब कुछ कर लिया।

(ज़हीर अहमद ख़ान, मुरब्बी सिलसिला, इंचार्ज विभाग रिकार्ड दफ़्तर पी. ऐस लंदन)(धन्यवादसहित अख़बार अल् फ़ज़ल इंटरनैशनल 12 मार्च 2021 ई.)

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad